

# मंगल निधि



वर्ष-2013-14

अंक - 18

## सूचना

केवल कार्यालयीन उपयोग हेतु  
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन,  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर, कर्नाटक की  
वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

\*\*\*\*\*

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से  
संपादक तथा कार्यालय का  
सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## प्रथम मुख पृष्ठ

पिलिकुल निसर्ग धाम,  
वामंजूर, मंगलूर

## प्रकाशक

राजभाषा प्रकोष्ठ  
क्षेत्रीय कार्यालय, डा.पे.सं 572  
भविष्य निधि भवन, सिल्वा रोड,  
हाई लैंड्स, मंगलूर- 575002

## मुख्य संरक्षक

श्रीमती कविता एन. जोर्ज  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-1, मंगलूर क्षेत्र

## संरक्षक

श्री रंजय मूशाहरी,  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-11  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

## परामर्श मंडल

श्रीमती रेणु रामचन्द्रन,  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-11  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

श्रीमती प्रभावती बी. जोशी  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-11  
प्रभारी, उ क्षेत्र का, चिक्कमगलूर

श्री नवीन कुमार कनौजिया  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-11  
प्रभारी, उ क्षेत्र का, मैसूर

श्री चंद्रप्पा के. सी.  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-11  
प्रभारी, उ क्षेत्र का, शिवमोग्गा

श्री प्रसन्न एन. मुळे  
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-11  
प्रभारी, उ क्षेत्र का, उडुपि

## मुख्य संपादक

श्रीमती अनुराधा.के  
सहायक निदेशक (रा भा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

## सह संपादक

सुभाष कुमार सामन्तो  
हिन्दी अनुवादक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।

## टंकण सहयोग

सुश्री त्रिवेणी आर. उळ्ळाल  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक

विषय सूची


क्रम	क्या है	कहाँ है	क्रम	क्या है	कहाँ है
1.	संदेश-अपर केंद्रीय भविष्य निधि आयुक्त	3	23.	अच्छी पुस्तकें भाग्य की लकीरें बदलती है	22-24
2.	मुख्य संरक्षक की कलम से	4	24.	शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य	25
3.	संपादकीय	5	25.	आप ए जाने	26
4.	चित्र समाचार	6-8	27.	अपने इर्दगिर्द	27
5.	आप की नजरों में.....	9-11	28.	शिकार हूँ या शिकारी	28-31
<b>कविता वल्लरि</b>			29.	समय का सदुपयोग	31
6.	बेटी	12	30.	मोबाइल फोन	32
7.	जिंदगी	12	31.	रक्त दान	33
8.	जल	13	32.	मानव विकास में विज्ञान का योगदान	34-35
9.	बहन	13	33.	शब्द बंध	35
10.	अपने - पराये	14	34.	मनुष्य का दिमाग और कंप्यूटर	36-37
11.	माँ	14	35.	परहित सरिस धर्म नहीं भाई	37
12.	ईमान	15	36.	ग्राम्य भारत - एक नज़र	38-39
13.	कश्मकश	15	37.	विश्वकप फुटबॉल के कुछ दिलचस्प तथ्य	39
14.	एक अनोखी रात	15	38.	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में प्रयोग किए जानेवाले संकेताक्षर व विस्तार तथा लिप्यंतरण	40-41
15.	मेरी मोहब्बत।	16	39.	सुविचार	41
16.	मेरी शायरी.....	16	40.	कम्प्यूटर	42-43
17.	मैसूर रोड ऑफिस की यादें।	16	41.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	43
<b>गद्य सुमन</b>			42.	निर्मल गंगा अभियान	44-45
18.	हार जीत	17-18	43.	दार्जिलिंग (एक हिल स्टेशन)	46-47
19.	स्वस्थ शरीर है सबसे बड़ा खजाना	19-20	44.	चिकित्सा क्षेत्र	47
20.	स्त्री शिक्षा	20	45.	कार्यलय पर एक नजर	48-58
21.	जीवन कला	21			
22.	बिजली बचत के 10 सरल उपाय	21			

## आप की नजरों में.....

महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित “मंगल निधि” का 17 वां अंक प्राप्त हुआ। दक्षिण भारत के कार्यालयों से हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के बढ़ते प्रयोग को प्रदर्शित करता है। पत्रिका की सामग्री मौलिक एवं अच्छी है। अगले अंक में प्रूफ संशोधन और अच्छे ढंग से करके पत्रिका को और उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। पत्रिका से संबंधित सभी अधिकारी और कर्मचारियों को बधाई। आशा करता हूँ कि पत्रिका निरंतरता बनाए रखेगी।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वर्ष 2013-14 के दारान क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु नराकास का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। कृपया क्षेत्रीय आयुक्त-1 सहित सभी कर्मियों को मेरी ओर से बधाई प्रेषित करें। क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा परिवार को मेरी विशेष बधाइयाँ।

  
**उपेन्द्र दत्त शुक्ल**  
उप निदेशक (राजभाषा)  
दक्षिण अंचल, हैदराबाद


महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका “मंगल निधि” के 17 वें अंक की एक प्रति हमेशा की तरह, बिना किसी चूक के प्राप्त हुई, धन्यवाद। साहित्य रस से सरोबार, भाषा को केन्द्र में रखकर रचा गया संपादकीय पढ़कर बहुत ही अच्छा लगा। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुन्दर एवं आकर्षक है, सेंट मेरीस द्वीप उडुपि का चित्र, कर्नाटक की रमणीय प्रकृति की सुंदरता को आभामंडित कर रहा है।

स्वामी विवेकानंद की जीवनी पर श्री दयानंद जी द्वारा रचित आलेख का केन्द्र बिन्दु विवेकानंद जी का देश प्रेम है, जिसे लेखक ने सफलतापूर्वक अभिलक्षित किया है। श्रीमती जयश्री जी द्वारा रचित गद्य “क्या बेटियाँ पराई होती हैं?” वस्तुतः भारत में स्त्रियों की परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है। श्री के.अनंत जी द्वारा लिखा गया लेख “बेरोजगारी की समस्या और समाधान” हमारे

देश में बढ़ रही बेरोजगारी की समस्या पर गहरा आघात करता है। मानव अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का कैसे दुरुपयोग करता है, इसके बारे में अक्षता जी ने अपनी लघु कथा “प्रकृति प्रकोप” में कलात्मक ढंग से दर्शाया है।

गृहपत्रिका में प्रकाशित विभिन्न कार्यक्रमों के छाया चित्रों से पत्रिका में एक निखार उभर कर आया है, जो उत्कृष्ट संपादन की बानगी है। आवरण, साज-सज्जा के साथ राजभाषा कार्यक्रम संबंधी विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों एवं हृदयग्राही विचारों से ओत-प्रोत गृह पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाइयाँ।

  
**डॉ बी आर पाल**  
वरिष्ठ कार्यपालक (रा भा)  
मंगलूर रिफाइनरी एण्ड पेट्रो केमिकल्स  
लिमिटेड, मंगलूर

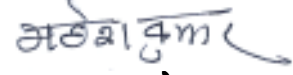
## मंगल निधि

महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय के द्वारा विभागीय पत्रिका मंगल निधि का 17 वाँ अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक हैं। पत्रिका में लेख कविताएँ, कहानियाँ और व्यंग्य आदि रोचक और प्रेरणादायी हैं। पत्रिका

की रोचकता को बनाए रखने का प्रयास सराहनीय है। संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाइयाँ।



(महेश कुमार)

सहायक आयुक्त (प्रशासन)  
क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

महोदया,

उपरोक्त विषय से संबंधित आपके दिनांक 15/01/14 के पत्र सं/कर्ना/एम एन/क्षे का/प्रशा/मि/ 15/551-673/13-14 प्राप्त हुआ है। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत सुंदर है जो प्रदेश की छवि को उजागर करता है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर

एवं जानकारी से पूर्ण हैं। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।



(एस.दासमहापात्र)

सहायक भविष्य निधि आयुक्त  
ब्रह्मपुर, ओडिशा

आदरणीय महोदया,

विषयांतर्गत आपकी पत्रिका "मंगल निधि" 2012-13 अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुआ। पत्रिका में दी गई रचनाएँ काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। कई रचनाएँ जैसे "महान स्वतन्त्रता सेनानी मदन लाल धींगरा" के बारे में ज्ञान, इंसाफ की आवाज, सौर ऊर्जा नारी के बारे में "क्या बेटियाँ पराई होती हैं", बहुत ही अच्छी लगीं। बीच-बीच में चुटकुले डालकर इसे और रोचक बनाने का काम किया गया है। इसमें मुर्देश्वर की शिव मूर्ति

डालकर इसके कलेवर को काफी अच्छा बनाया गया है।

इसके सफल सम्पादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद।



(हरिश्चंद्र पंडित)

सहायक प्रबंदक (राजभाषा)  
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

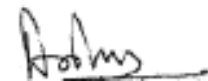
महोदया,

आपकी विभागीय पत्रिका "मंगल निधि" वर्ष-2012-13 का 17 वाँ अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर है। पत्रिका में छपी सभी रचनाएँ सराहनीय हैं। विशेष रूप से "सौर ऊर्जा का तंत्रज्ञान", "इंसाफ की आवाज़" लेख अच्छा लगा। पत्रिका में छपी हुई सभी कविताएँ सराहनीय हैं। पत्रिका में कार्यालयीन गतिविधियों का मनोहारी समावेश किया गया है जो कि काफी प्रशंसनीय है।

वर्ष 2012-13 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट योगदान के लिए मंगलूर कार्यालय को प्राप्त द्वितीय पुरस्कार के लिए बधाई।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।



(विनीता श्याम)

सहायक निदेशक (राजभाषा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-।

## मंगल निधि

महोदया,

“मंगल निधि” का 17 वां अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम इसके लिए धन्यवाद। राजभाषा पत्रिका में छपी सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं। यह बड़े ही गौरव की बात है कि भाषायी आधार पर ‘ग’ श्रेणी में स्थित क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों की अगाध श्रद्धा, अपरिमित रुचि एवं अटूट निष्ठा है। यह सच है कि यही श्रद्धा, निष्ठा और रुचि ही रचनाओं का आकार ले पायी है।

अंत में सभी रचनाकारों के साथ-साथ

संपादक महोदया को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, जिनके अथक प्रयास एवं कुशल नेतृत्व में पत्रिका आकर्षक, उपयोगी एवं रोचक बन पायी है।

सादर,



(रणाय रणजीत सिंह)

सहायक निदेशक (राजभाषा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-11, थाणे

महोदया,

आपके कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका “मंगल निधि” वर्ष 2012-13 का अंक 17 सहर्ष प्राप्त हुआ।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही शानदार है जिसके द्वारा भगवान शिव की भव्य प्रतिमा के दर्शन होते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। कब आओगे तुम..?, हार, मुन्नी, लाडली, जिन्दगी, प्रकृति, इंसान की आवाज, सौर ऊर्जा का तंत्रज्ञान तथा स्वामी विवेकानंद आदि लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायक

हैं। पत्रिका में प्रकाशित संपूर्ण रचनाएं बहुत ही बढ़िया, ज्ञानवर्धक व उच्च कोटि की हैं।

पत्रिका के शानदार प्रकाशन हेतु संपूर्ण संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका निरंतर सफलता के पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामनाएँ हैं।



(विनाय वशिष्ठ)

सहायक भविष्य निधि आयुक्त (राजभाषा)  
चण्डीगढ़

## जीवन के पाँच दैत्य

अपने मानव जीवन में इन पाँच दैत्यों से हमेशा दूर रहना चाहिए। तभी आप जीवन का सच्चा आनंद ले पायेंगे।

1. गुस्सा: अक्ल को खा जाता है।
2. अहंकार: मन को खा जाता है।
3. चिंता: आयु को खा जाती है।
4. लालच: ईमान को खा जाती है।
5. रिश्तत: इन्सान को खा जाती है।

\*\*\*\*\*

## अनमोल वचन

1. निराशा में प्रतीक्षा अंधों की लाठी होती हैं।
2. आँसू दर्द की मौन भाषा हैं।
3. कर्म में बोलने की भी शक्ति होती है।
4. ईश्वर की अनुभूति हृदय को है, मस्तिष्क को नहीं।
5. गलत बोलने से शांत रहना ज्यादा बेहतर है।

संग्रह : सुभाष कुमार सामन्तो  
हिन्दी अनुवादक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।

कविता वल्लरि

बेटी



घर की सब चहल-पहल है बेटी  
सूने जीवन में खिला कमल है बेटी।

कभी है धूप सुहानी  
कभी चंदा सी शीतल है ए सयानी।।

शिक्षा, गुण संस्कार रोप दें,  
फिर बेटों से सबल है बेटी।।

सहारा दो गर विश्वास का।  
तो पावन गंगाजल है बेटी।।

प्रकृति के सदगुण सींचो,  
तो प्रकृति सी निश्छल है बेटी।।

क्यों डरते हो जन्म देने से  
अरे, आने वाला कल है बेटी।।

- शरतचन्द्र गट्टी,

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

जिंदगी



जिंदगी है यह क्या चीज़।  
कुदरत ने बनाई है इसे अज़ीज़।  
होती है एक हलकी सी चींख से शुरू।  
नजाने जिस का अंत है कब मगर ?

कभी हँसाती कभी रुलाती,  
कई अरमानों को नित जगाती।  
भरी जवानी में छोडी है कितनों का साथ।  
हुए हैं बुढ़ापे में कई अनाथ।

सिखाती है सबक कई सारे।  
दिखाती सपने सुहाने प्यारे।  
ले जाती है कभी अपनों से दूर।  
बनाती है पराये को अपना नूर।

कटता है समय रुकती नहीं जिंदगी।  
हर पल की यादें बनी है बानगी।  
विधाता की लीला है ये अनोखी,  
नित अमन, शांति रह गये है बाकी।

जॉर्ज डिसोज़ा,

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि

हँसने से किसने रोका

लडकी:- पप्पा मुझे एक बहुत दूर रहने वाले लडके से प्यार हुआ है। मैं हूँ भारत में, पर वो है अमरीका में। हम दोनों मिले एक डेटिंग वेब साइट पर, दोस्त हुए फेसबुक पर लंबी चैट किए वॉट्स अप पर और प्रपोस किए स्कैप पर और दो महीनों से हम दोनों का रिलेशनशिप वैबर से हुआ है। मुझे आप का आशिर्वाद चाहिए।

पिताजि:- वाह, सच्ची में ! तब ट्विटर पर शादी करों, ई बे से अपना बच्चा खरीदो, ई मेल से भजो और अगर अपनी पति से तंग आगई तो ओ एल एक्स पे बेचो।

## जल



झल झल करती बहती नदियाँ,  
निरख कर तुष्ट हुई अखियाँ।

सारे गम को भुला देती है, ये  
मन को सुशांत करती है ये।

प्रकृति का है अनमोल वरदान,  
दूषित किया इसे मानव हैवान।

सब कुछ अपना स्वार्थ का उपज,  
बहने दो इसे सदा सहज।

मैय्या है ये जीवदायिनी,  
जन-जन की है तृषा हारिणी।

हरियाली की है ये संगिनी  
जीवराशि की भवतारिणि।

- एस मुम्ताज़ बेगम,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

## बहन



मेरी बहना प्यारी बहना,  
बिछडना नहीं, हमेशा साथ ही रहना।

करना प्यार हमेशा रब से,  
डरना नहीं कभी भी जग से।  
हिम्मत से करो सारा काम  
रोशन करो परिवार का नाम।

देना सत्य का साथ हमेशा।  
तुझे न होगी कभी निराशा।  
करना प्यार हर दम जग से,  
रूठना नहीं कभी भी हमसे।

मेरी बहना प्यारी बहना,  
बिछडना नहीं, हमेशा साथ रहना।



- पि.धन्या.एस नायक  
आशा एस नायक की सुपुत्री  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

## साथ

समय, सत्ता और शरीर  
चाहे साथ दें ना दें, लेकिन,  
स्वभाव, समझदारी, सत्संग और  
सच्चे संबंध हमेशा साथ देते हैं।

## प्रार्थना

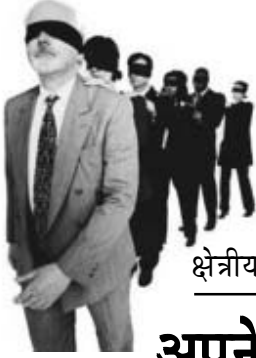
प्रार्थना ऐसी करनी चाहिए  
जैसे सब कुछ ईश्वर पर ही निर्भर है,  
और काम ऐसा करना चाहिए  
जैसे कि सब कुछ हम पर निर्भर है।



संग्रह : आर. महेश बाबु  
प्रवर्तन अधिकारी  
मडिकेरि जिला कार्यालय

## रिश्ता निभाना

किसी भी रिश्ते निभाने के लिए  
कसमों और वादों की जरूरत नहीं है,  
बस उसे निभाने के लिए दो खूबसूरत लोग  
चाहिए-  
एक भरोसा कर सके और  
दूसरा उसे समझ सकें।



**लता एन.शेट**  
वरिष्ठ सामाजिक  
सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

## अपने – पराये

चार दिन की है जिंदगी।  
गम-खुशी की ही बंदगी।  
कौन है अपने? कौन पराये?  
कैसे परखे कोई ये बताएँ।

खून के रिश्ते माने हैं सब अपने,  
देखे हैं सदियों से खूब सारे सपने।  
खाते हैं कई बार अपनों से ही धोखा  
होनी को कभी भगवान भी ना रोका।

बनते हैं रिश्ते हरदम अपने आप,  
बिगडते हैं क्यों, क्या है ये अभिशाप ?  
सच्चाई के आर्डने के सहारे,  
बनी रहें ये जिंदगी नित प्यारे।

अपना समझ कर दिल से जिसे माना  
हकीकत में हरदम रहे अनजाना।  
परखने में करें सब सावधानी,  
संजोग कर जीए अपनी जिंदगानी।



## माँ

माँ एक शब्द सुनते ही,  
उमड़ आती है दिल में ममता की शरधि।  
उभर आता है मन में सम्मान  
तेरे असीम प्यार और ईमान।।

तेरे ही प्यार और त्याग का फल,  
माँ जो आज हूँ मैं बुलंद, उज्वल।  
तराश कर मुझे जीवन में बनाया तूने हीरा,  
तुझ बिन जीवन भर है घोर अंधियारा।।

सुलझाकर जीवन की सारी समस्या।  
जीवन भर की तेरी तपस्या।  
व्यर्थ न होने दूँगा मैं कभी।  
मत छोडो मुझे पलभर अभी।।

तेरे प्यार की छत्र छाया।  
बनी है भव की मोह माया।  
हर जनम में बनें तू ही माँ मेरी।  
यही है प्रार्थना रब से प्यारी।।

- **कृष्णा नाइक,**  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि

कैः  
मि  
मि  
मि

शिक्षक: तुमने मेरा दिमाग खराब कर दिया है, कल मैं तुम्हारे पिताजी से मिलूँगा।  
छात्र: सरजी, पिताजी से नहीं, चाचाजी से मिलिए। डॉक्टर तो वो है।

\*\*\*\*\*

एक आदमी जाली नोट छापता था। एक बार गलती से 15 रुपये का नोट छाप दिया।  
उसने सोचा शहर में नोट नहीं चलेगा सो गाँव की एक दुकान में 3 रु का सामान लिया  
और 12 रु वापस माँगा। दुकानदार ने उसे 6 - 6 के दो नोट थमा दिये।

**सुभाष कुमार सामन्तो**  
हिन्दी अनुवादक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।



## मेरी दो कविताएँ

### ईमान

चालिस टके की है आमदनी ।  
काम करें या न करें 30 वें दिन है धनी ।  
सारी जिन्दगी यूँही गुजारी,  
किसी के भरोसे दिन रात बितायी।  
क्या मिलना है—क्या मिलेगा ?  
क्या करना है यही हर पल जताई।  
भरे पेट सूझते हैं कई सुझाव सलाहें।  
किसी की आस पर किसी की निगाहें।  
अध भरे पेट को दे अगर रोटी,  
आँखों में मुस्कान, लब पर दुआएँ ॥  
कहते हैं सुबह का भूला रात को लौटे।  
थके हुए कदम और गुमसुम सी आहटें।  
घर पहुँचकर पाये बंद दरवाज़ा,  
माहौल है स्तब्ध, सूने हैं सन्नाटे॥



राम प्रसाद भट्ट  
अनुभाग पर्यवेक्षक,  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

### कश्मकश

यह सन्नाटा, यह गूँज दिलाते हैं अजीब कश्मकश  
एक आहट भरी कदम कराती है मन भर उदासा।  
धूम धड़ाकों से भरी इस महफिल-ए-जिंदगी के  
हर पल है दौड़ भरे, एक से बढ़कर एक थी खामोश।  
तजुर्बा इस जीवन का दिलाता है सक्त कठिन अंदाज।  
तूफानी प्रपात में डूबेगा औकात से पार दिल का जहाज़।  
मैं और मेरी तनहाई ऊब गए हैं इस बेफिकर हालात से।  
फक्र की बात यह है कि हम फिर भी सहते क्यों है? ।

चारों ओर खामोशी और तनहाई।  
हवा ने ली लंबी अंगड़ाई।  
दिल में भरी उल्लास उमंग  
वह तो पूनम की निराली रात थी॥  
छिपा था सूरज अंबर के उस पार  
फैली चांदनी तरु लताओं पर  
हँस रही थी रात की रोशनी  
वह तो पूनम की अनोखी रात थी॥



### एक अनोखी रात

हवा ने पसारी मंद सुगंध  
खामोशी में थी गीत तरंग।  
तनहाई में भी मस्त पवन।  
वह तो पूनम की मीठी रात थी॥  
सागर रूपी आसमान में  
देखी मोती की चमक सितारों में।  
अंधियार में भरी उजाले से पुलकित पृथ्वी,  
वह तो पूनम की खुशबूदार रात थी।  
शाहजहाँ का ताजमहल है तू  
कालिदास की उत्कृष्ट रचना है तू,  
मेरे दिल का ख्याल है तू,  
पूनम की स्नेही रात है तू ॥

देखते-देखते कभी थकती नहीं,  
जहाँ जाती उससे नज़र हटती नहीं।  
तारों के बीच हँसता, वह रात का राजा ।  
वह तो पूनम की चमकदार रात थी॥  
एक नई आशा है तन में  
सिर्फ चाँद नहीं, मेरी स्फूर्ति हो तुम।  
निराशा को आशा में बदले हो तुम  
तुम तो पूनम की सच्ची रात हो॥

— त्रिवेणी आर.उळ्ळाल,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

मेरी तीन कविताएँ

मेरी मोहब्बत।



हमने जो की थी मोहब्बत आज भी है,  
तेरे जुल्फों के साये की चाहत अभी भी है,  
रात कटती है, आज भी ख्यालों में तेरे....  
दीवानों सी वो हालत आज भी है ।

किसी और की तस्वीर अब भी उठाई नहीं,  
बेईमान आँखों में, थोड़ी सी शराफत आज भी है,  
चाह के एक बार फिर छोड देना तुम.....  
दिल तोड जाने की इजाजत, आज भी है ॥

मेरी शायरी.....



में रोऊंगा तो पलकों पे नमी रह जाएगी,  
जिन्दगी बस नाम की जिन्दगी रह जाएगी,  
ये नहीं कि तुम बिन जी ना पाएँगे .....  
हाँ, मगर जिन्दगी में एक कमी रह जाएगी ।

इतनी मोहब्बत ना कर, कि बिखर जाऊँ मैं,  
थोड़ी रुठ भी जाओ, कि सुधर जाऊँ मैं,  
अगर हो जाएँ खता तो, हो जाना खफा तुम....  
इतना भी ना हो जाना, कि मर जाऊँ मैं ।

मैसूर रोड ऑफिस की यादें।

वो रोड क्रिकेट की शाम,  
वो राजेश्वरी माता का नाम....

वो ऑफिस बॉलकोनी की हवा,  
वो केयर टेकर की दवा...

वो टी टाईम की मस्ती,  
वो सुधा मैडम की चाय सस्ती...

वो साई सागर के पास का माहौल,  
वो मंजुनाथा बेकरी का वेज रोल...

वो क्लेम सेटेलमेंट की मार,  
वो ए सी सर की स्विफ्ट कार...

वो घर जाने को दिल बेकरार,  
वो घडी पे 5.45 का इंतजार...

वो हर शुक्रवार टेंपल का जाना,  
वो दो, तीन बार प्रसाद खाना...

वो बाईक पार्किंग का नया शेड,  
वो हर वक्त बन्द ईडीपी का गेट...

वो गलती पे एस एस की फटकार,  
वो स्कूल के लिए सेक्शन में टकरार...

वो पी एफ ऑफिस की बीती बातें,  
ये है मेरे मैसूर रोड ऑफिस\* की यादें।

\*\*\*\*\*

\* वर्तमान में मैसूर रोड ऑफिस का नाम बदलकर राजाराजेश्वरी नगर ऑफिस किया गया है।

**सुभाष कुमार सामन्तो**

हिन्दी अनुवादक , उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।

# हार जीत



हार इस शब्द के दो अर्थ हैं - एक है संज्ञा शब्द के रूप में माला और दूसरा क्रिया शब्द के रूप में हारना। अगर दूसरे अर्थ को चुनौती के रूप में स्वीकार किया जाय तो जीत रूपी विजयमाला गले में डालने का अवसर अवश्य मिल जाता है। जीवन में हार और जीत ही हमारे दुःख और सुख के आधार बनते हैं। पर, वास्तव में ये दोनों अर्थात् दुःख और सुख हमारी देखने की दृष्टि पर निर्भर हैं। क्योंकि किसी का हार जाना, और किसी के लिए जीत ही होती है। अतः यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ये दोनों व्यक्ति के विकास के लिए अत्यावश्यक है। हर व्यक्ति का इस प्रकार के विकास पूरी मानवता के विकास के लिए कारण बनता जाता है। जैसे अंत शब्द का अर्थ अंत न होकर किसी और के आरंभ के लिए कारण होता है, ठीक वैसे हार भी जीत की पहली सीढ़ी बन जाती है।

व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए जीत के स्थान पर हार ही सहायक बनता है। संसार में जितने भी सफलता के कारण महान बने थे या बनते हैं, उन सभी ने ज्यादातर हार रूपी सीढ़ी पर चढ़कर ही जीत तक पहुँचे हैं। यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि अगर हमने जीवन में हार को स्वीकार कर लिया तो निराशा और असहायकता ही



दयानंद के

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

हाथ लगेगी और कुछ नहीं। ऐसे में हार के संदर्भ को अपनी चतुरता से निभानेवाला मात्र अपने व्यक्तित्व का विकास कर पाता है। यहाँ सदा-सर्वदा एक बात को याद रखना होगा कि “धीर्य सर्वत्र साधन” है। क्योंकि जीवन हमेशा गुलाब के पौधे की तरह होता है। उसमें काँटे भी होते हैं और फूल भी। गुलाब के फूल को अपनाना है तो काँटों से चुभ लेना भी पड़ता है। काँटों से चुभ लेनेवाली बात को ही याद कर लेंगे तो दुःख ही प्रमुख बन जाएगा। पर, उन काँटों के ऊपर गुलाब को देखनेवाले को मात्र सुख मिलता है। संतोष का सुखद अनुभव प्राप्त होता है।

किसी की निन्दा भरी छोटी सी बात भी कभी-कभी हमें दुःख के गड्ढे में फेंक देती है। अर्थात् दुर्बल मन वाला व्यक्ति ऐसे संदर्भों में अक्सर टूट जाता है। इसके गंभीर दुष्परिणाम को भी देख सकते हैं। ऐसे लोग न पीछे मुड़कर अपने भूतकाल का अवलोकन करते हैं न आगे आनेवाले भविष्य की ओर। सिर्फ वर्तमान को देखते हैं। इस कारण से दृढ़ निर्णय नहीं कर पाते हैं। घोर निराशा छा जाती है तो असहायकता के मारे उनका जीवन दुर्भर हो जाता है। यह कभी भी जीवन विकास की यात्रा में अच्छा लक्षण नहीं है। ऐसे क्षणों में हमें सिंह की याद कर लेनी चाहिए। अर्थात्, कहा जाता है कि सिंह दस कदम चलकर एक बार पीछे मुड़कर अवश्य देखता है। अतः हमें भी अपने दुर्बल और दुःख के क्षणों में पीछे मुड़कर अवश्य देखना होगा क्योंकि जीवन में बीते किसी

## मंगल निधि

भी सुवर्ण क्षण ऐसे दुर्बल क्षणों में धैर्य देने में, शक्ति भरने में काम आएगा। तब हम नयी उमंग और नये उत्साह के साथ चुनौतियों का सामना कर पाएँगे।

कृष्ण भगवान का उदाहरण यहाँ संगत लगता है। उसे जगद्गुरु माना जाता है। पर यह पद उसे कितने संघर्षों का सामना करने के बाद मिला, इसके बारे में भी हमें सोचने की आवश्यकता है। जन्म लेते ही अपने माता-पिता से अलग होकर उसे जीना पड़ा। नंद-यशोदा का प्रिय पुत्र तो बना, पर अपने माता-पिता तक पहुँचने के लिए उसे कितना संघर्ष करना पड़ा। हर चुनौती को स्वीकारते, संघर्ष करते उसने आखिर धर्म की स्थापना कर ही ली। उसका जीवन ही एक अद्भुत पाठ है। अतः हमें किसी भी संदर्भ में हार मान लेना नहीं चाहिए।

वास्तव में हार ही जीत की पहली सीढ़ी होती है। वर्तमान में हारनेवाला भविष्य में अवश्य जीत सकता है। बस दृढ़ मनोबल और संकल्प चाहिए। जड़ पत्थर चोट खा-खाकर भगवान की मूर्ति बनकर सबसे पूजी

जाती है। फिर सूझ-बूझवाला मनुष्य दृढ़ संकल्प करें तो क्या नहीं बन सकता। हारने के क्षण हम अवश्य कड़वाहट से भर जाते हैं, पर संयम से रहने पर वही कड़वाहट शक्ति के रूप में बदल जाती है। रोग दूर करनेवाला औषध जरूर कड़वा हो सकता है, पर वही जीवनशक्ति प्रदान करनेवाली संजीवनी भी है।

अगर हम अपनी आँखें खोलकर चारों ओर देखेंगे तो जरूर हार को चुनौती के रूप में स्वीकार करके जीत के लक्ष्य तक पहुँचे हुए अनेक “चेतन” नज़र आएँगे। उनके पदचिह्नों को आदर्श मानकर आगे बढ़ेंगे तो हम भी अपने लक्ष्य तक जरूर पहुँच सकते हैं। अतः किसी भी विफलता के क्षण में रोना नहीं गलत निर्णय लेना नहीं। क्योंकि रोना, टूटना, निराश होना कायरता है। स्वामी विवेकानंद जी के कथन के अनुसार “हम तो अमर संतान हैं। हमें तो सदा हँसते-हँसते अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते ही रहना है।”



## हँसना मना है

माँ – बेटा आज स्नान किया ?

बेटा – नहीं माँ

माँ – क्यों नहीं किया ?

बेटा – आज मैं स्नान करूँगा तो पड़ोसी गंधा रमेश के पेट में दर्द हो जाएगा।

\*\*\*\*\*

बालक ने पप्पू अपनी माँ से पूछा – भूत, वर्तमान भविष्य काल का एक उदाहरण दो।  
माँ – मैं सुंदर थी, मैं सुंदर हूँ, मैं सुंदर ही रहूँगी

बालक ने अपने पिता से पूछा – पिताजी आप भी एक उदाहरण दीजिए।

पिता तुम्हारी माँ ने अपने बारे में गलत सोचा था, गलत सोचती है, गलत ही सोचेगी।

– एस मुस्ताज़ बेगम,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

आदमी: (अपने मित्र से) अरे भाई, तुम चम्मच क्यों धो रहे हो, ये होटल वाले खुद धो लेंगे। यह उनका काम है।

मित्र: यार वर्ना जेब खराब हो जाएगी।

\*\*\*\*\*

महिला: (बस कण्डक्टर से) क्या बच्चों के आधे टिकट लगत हैं ?

कण्डक्टर: जी हाँ ... यदि वह 7 से कम हो।

महिला: तब ठीक है, मेरे अभी मात्र 6 हैं।

\*\*\*\*\*

दो महिला आपस में बात कर रही थीं।

पहली महिला: मैं दुनिया के सबसे घटिया, कमीने, कंजूस एवं धोखेबाज इंसान से शीघ्र तलाक लेने वाली हूँ।

दूसरी महिला: अरे तुम मेरे पति से तलाक कैसे ले सकती हो।

सुभाष कुमार सामन्तो

हिन्दी अनुवादक

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।

## स्वस्थ शरीर है सबसे बड़ा खजाना



संग्रह: आनंद के.एस,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, चिक्कमगलूर



आधुनिक जीवन शैली की तेज रफ्तार एवं भागदौड़ भरी जिन्दगी में सेहत का विषय बहुत पीछे रह गया है और नतीजा यह निकला कि आज हम युवावस्था में ही ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग, कोलेस्ट्रॉल, मोटापा, गठिया, थायरॉइड जैसे रोगों से पीड़ित होने लगे हैं जो कि पहले प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था में होते थे और इसकी सबसे बड़ी वजह है खान-पान और रहन-सहन की गलत आदतें। आओ हम सेहत के इन नियमों का पालन करके खुद स्वस्थ रहे तथा परिवार को भी स्वस्थ रखते हुए अन्य लोगों को भी अच्छे स्वास्थ्य के लिए जागरूक करें ताकि एक स्वस्थ एवं मजबूत समाज और देश का निर्माण हो, क्योंकि कहा भी गया है- “पहला सुख निरोगी काया।”

भोजन हो संतुलित-घी, तैल से बनी चीजें जैसे पूड़ी, परांठे, छोले-भठूरे, समोसे-कचौड़ी, जंक फूड, चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक का ज्यादा सेवन सेहत के लिए घातक है इनका अधिक मात्रा में नियमित सेवन ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह, मोटापा एवं हार्ट डिजीज का कारण बनता है तथा पेट में गैस, अल्सर, एसिडिटी, बार बार दस्त लगाना, लीवर खराब होना जैसी तकलीफें होने लगती हैं इनकी बजाय खाने में हरी सब्जियाँ, मौसमी फल, दूध, दही, छाछ, अंकुरित अनाज और सलाद को शामिल

करना चाहिए जो कि विटामिन, खनिज, लवण, फाइबर, एवं जीवनीय तत्वों से भरपूर होते हैं और शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

चीनी एवं नमक का अधिक मात्रा में सेवन ना करें, ये डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, हृदय रोगों का कारण हैं।

बादाम, किशमिश, अंजीर, अखरोट आदि मेवा सेहत के लिए बहुत लाभकारी होते हैं इनका सेवन अवश्य करें।

पानी एवं अन्य द्रव पेय (लिक्विड) जैसे फलों का ताजा जूस, दूध, दही, छाछ, नींबू पानी, नारियल पानी का खूब सेवन करें, इनसे शरीर में पानी की कमी नहीं हो पाती, शरीर की त्वचा एवं चेहरे पर चमक आती है, तथा शरीर की गंदगी पसीना और पेशाब के द्वारा बाहर निकल जाती है।

**व्यायाम का करें नियमित अभ्यास-** सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाएं, हरी घास पर नंगे पैर घूमें, दौड़ लगाएं, वॉक करें, योग, प्राणायाम करें, इन उपायों से शरीर से पसीना निकलता है, माँस पेशियों को ताकत मिलती है, शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है, अनेक शारीरिक एवं मानसिक रोगों से बचाव होते हैं, दिन भर बदन में चुस्ती फुर्ती रहती है, अच्छी भूख लगती है इसलिए नियमित रूप से व्यायाम अवश्य करें।

गहरी नींद भी है जरूरी-शरीर एवं मन को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन लगभग 7

## मंगल निधि

घंटे की गहरी नींद एक वयस्क के लिए जरूरी है, लगातार नींद पूरी ना होना तथा बार बार नींद खुलना, अनेक बीमारियों का कारण बनता है।

**अच्छी नींद के लिए ये उपाय करें -** सोने का कमरा साफ सुथरा, शांत एवं एकांत में होना चाहिए, रात को अधिकतम 10-11 बजे के अंदर सो जाना और सुबह 5-6 बजे तक उठ जाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है, सोने से पहले श्वासन करने से अच्छी नींद आती है, खाना सोने से 2-3 घंटे पहले कर लेना चाहिए एवं शाम को खाना खाने के बाद 20-25 मिनट अवश्य घूमें।

**टेंशन को कहे बाय बाय -** रोज मर्ग की जिन्दगी में आने वाली समस्याओं के लिए चिन्तन करना सही है चिन्ता करना नहीं, चिन्ता तो मरने के बाद शरीर को जलाती है किन्तु लगातार अनावश्यक चिन्ता जीते जी शरीर को जला देती है इसलिए तनाव

होने पर भाई, बंधु एवं विश्वास पात्र मित्रों से सलाह मश्वरा करें यदि समस्या फिर भी ना सुलझे तो विशेषज्ञ से राय लें।

**नशे से रहें बच के -** युवा पीढ़ी के लिए अगर कोई सबसे खतरनाक बीमारी है तो वो है नशे के जाल में फँसना, शराब, धूम्रपान, तंबाकू ये सब सेहत के दुश्मन हैं। किसी भी स्थिति में नशे की लत से बचें, यदि नशे से बचे हुए हैं तो बहुत अच्छा किन्तु, यदि कोई नशा करते हैं तो जितनी जल्दी नशे से दूरी बना लें उतना ही अच्छा है, ये ऐसी बीमारी है जो कैंसर और एड्स से भी ज्यादा खतरनाक है और एक साथ कई परिवारों को बर्बाद करती है तथा शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के नाश का कारण बनती है, इसलिए नशे से बचना ही बेहतर उपाय है।

ऊपर बताये गए स्वास्थ्य के नियमों का पालन अवश्य करें क्योंकि कहा भी गया है- "हैल्थ इज वेल्थ।"



## स्त्री शिक्षा



स्त्री और पुरुष जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। जब तक दोनों पहिए मजबूत रहेंगे तब तक जीवन रथ चलता रहेगा। इनमें से अगर एक कमजोर पड़ेगा तो रथ रुक जायेगा। इसलिए स्त्री को भी पुरुष के समान योग्य बनाना है। स्त्री को भी योग्य शिक्षा की आवश्यकता है।

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। बच्चों के लिए घर ही पाठशाला और माँ ही गुरु है। यदि माँ अनपढ़ हो तो वह अपने बच्चों को कैसे शिक्षा दे पाएगी? मेकवारे ने कहा है कि - "अगर एक पुरुष को शिक्षा दी जाएँ

**शिवानी.पै,** अनुपमा एस.पै वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक के सुपुत्री, क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

तो एक व्यक्ति ही शिक्षित बन जाता है, पर एक स्त्री को शिक्षा दी जाए तो सारा घर और संसार शिक्षित बन जाता है।" शिक्षा से स्त्री की हिम्मत बढ़ती है। आज-कल स्त्री हर काम कर रही है। घर संभालने के साथ-साथ वह बाहर के काम भी कर रही है। देश की हर महिला को शिक्षा दिलाने के लिए कानून तो जारी है। उनको भी समाज के हर एक क्षेत्र में उचित अवसर प्रदान करना समुचित है और समय की माँग है।



## जीवन कला

अनेक कलाओं में से जीवन यापन को भी एक कला मानी जाती है। जन्म व मृत्यु के बीच का जो फासला है, जिसमें सुख-दुख, उतार-चढ़ाव, रोना-हँसना आदि परिस्थितियाँ आती हैं इन सबको हँसते-खेलते जो जीता है उसी को जीना कहते हैं।

जीवन के हर मोड़ पर जो व्यक्ति संभलकर चलता है, सुख-दुख में चाहे अपना ही हो या दूसरों का। सही दिशा में चलकर सब की जिन्दगी को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करता है उसे ही हम कला कह सकते हैं।

किसी ने सही कहा है कि तुम कितने साल जिओगो यह उतनी जरूरी नहीं है, पर किस तरह जिओगे, यह बहुत जरूरी है। जीने का ढंग सीखने से ही जीवन में प्यार और आत्मविश्वास बढ़ते हैं।

हमें अपना जीवन सरल और सुन्दर तरीके से जीना चाहिए। सब को हँसाते हुए, एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होकर जीवन



व्यतीत करना चाहिए। केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी जीकर दिखाना चाहिए। लालच के दल-दल में फँसकर मनुष्य जन्म नरक सदृश बन जाता है।

जीवन में किसी चीज का ज्यादा मोह न रखते हुए दूसरों के साथ घुल मिलकर जो जीवन गुजारते हैं वे ही लोग मनुष्य कहलाते हैं। 'जियो और जीने दो' नीति को अपनाते हुए एक दूसरे की मदद करते हुए हमें अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

इसी का नाम तो जिन्दगी है और इस तरह जीना ही जीवन कला है।

- कृष्णा नाइक

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि



## बिजली बचत के 10 सरल उपाय

1. कार्यालय या घर जहाँ भी हो, ए सी का तापमान हमेशा 24 से 26 डिग्री के बीच रखें ।
2. फ्रिज को साफ तथा हवादार जगह पर रखें एवं जरूरत होने पर ही दरवाजा खोलें ।
3. नहाने का पानी गर्म करने के लिए इलेक्ट्रीक रॉड के बजाय गीजर का प्रयोग करें ।
4. घर से कहीं बाहर जाने पर सारे बिजली के उपकरण बंद कर दें ।
5. घर पर रोशनी के लिए हमेशा 5 से 15 वॉट तक का सी एफ एल बल्ब का ही प्रयोग करें।
6. जब कम्प्यूटर पर काम ना हो तो मॉनीटर बंद कर दें ।
7. टी वी को हमेशा रिमोट के साथ ही मेन लाईन से भी बंद करें ।
8. ट्यूब लाईट के लिए हमेशा इलेक्ट्रीक चोक का ही प्रयोग करें ।
9. बगीचा, छत, या रास्ते पर रोशनी के लिए सोलार लाईट लगाएँ ।
10. बिजली के उपकरण खरीदते या इस्तेमाल करते समय बिजली खपत कम करने की दी गई दिशा निर्देश का यथासंभव पालन करें ।

सुभाष कुमार सामन्तो

हिन्दी अनुवादक , उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर ।



# अच्छी पुस्तकें भाग्य की लकीरें बदलती है



मूल लेखक:- अरुण लक्ष्मण शेट्ट  
अनुवादक:- त्रिवेणी आर.उळ्ळाल,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

23 अप्रैल है-विश्व पुस्तक तथा कृति अधिकार दिन ।

है ये पुस्तक संस्कृति की चर्चा हेतु प्रशस्त दिन ।

‘पुस्तक’ है ज्ञान वृद्धि का एक संसाधन।

शारदा माता को है ये नित नमन।

समय बदल रहा है। आधुनिक जीवन का आनन्द, आतंक तथा घटनाक्रम भी परिवर्तित हो रहा है। सनसनीदार खबर फैलाने वाले सेलेब्रिटीज के बाजार में सूक्ष्म संवेदना निर्बल होती जा रही है। फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, आर.एस.एस, वीडियो कॉलिंग जैसे अंतर्जाल विहारों में विचरण करने के लिए इच्छुक युवाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।

वै फ़ै, स्मार्ट फोन, टेबलेट, नेनो तंत्रज्ञान, डिजीटल टेक्नालॉजी वीडियो अपलोड ...वाह! सूचना यंत्रों की मांत्रिक शक्ति ने बड़ी रोचकता से सुप्त जनता को जगाकर रख दिया है। कार्पोरेट की दुनियाँ में “धन का नर्तन” बड़ी जोरों पर है।

इतना सब होते हुए भी इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि मन को मोदित

करने वाला शक्तिशाली साधन और सामग्री ‘पुस्तक’ ही है। एडीसन, तो मानते हैं कि “अन्य सभी शौकों में से पढ़ने का शौक सर्व श्रेष्ठ है।” थामस कार्लेल का विचार है कि - “उत्तम पुस्तक का संग्रह ही विश्वविद्यालय है।” रवीन्द्रनाथ ठागोर कहते हैं कि “संसार को प्रकाशित करने के लिए सूर्य चाहिए तो जीवन को प्रकाशित करने के लिए पुस्तक चाहिए।” बैरन का तो मत है कि “एक बूंद स्याही, मचा देगी करोड़ों में तबाही।”

पुस्तकें हमें ‘संस्कृति’ के दर्शन कराती हैं। विकृतियों का उपशमन करती हैं। वे ज्ञान संपर्क का सेतु हैं। सूक्ष्म संवेदनाओं को न सूखने देने वाले ‘बांध’ हैं। अनिर्वर्चनीय आनन्द प्रदान करने वाले अक्षरों की अक्षय पंक्तियाँ हैं। साक्षरों में सज्जनता की वृद्धि कर, राक्षसों की संख्या को क्षीण करने वाले ‘अनुभव मण्डप’ हैं। आनन्द, आरोग्य में वृद्धि कर आतंक का निवारण करने वाली टॉनिक की गोलियाँ हैं। सूचना का केन्द्र हैं।

जी हाँ ... “देश का भ्रमण करना चाहिए, नहीं तो कोश पढ़ना चाहिए।” एकान्त पठन से जो सुख प्राप्त होता है, वह अतुलनीय है। अक्षरों की पंक्तियों को पढ़ने से मिलने वाला आनन्द वही जानता है जिसने उसका अनुभव किया है। हर जगह इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के मनोरंजन भरी ठाठ-बाट व नशा का जो हकीकत है। यदि हृद पार कर जाए तो बन जाता है आफत।



लेकिन .... पढ़ना, ऐसा नहीं है। “पुस्तक से प्राप्त ज्ञान, मस्तक में छिपा अमूल्य मणि व मनो वृक्ष में विकसित ज्ञान रूपी पुष्प समान होता है।” यह कन्नड कवि डी वी जी की उक्ति है। “विचारों के कशमकश में पुस्तक ही अस्त्र है,” ऐसा कहते हैं जार्ज बर्नाडशा। सिसरो तो यहाँ तक कह डालते हैं – “ग्रंथहीन गृह, आत्म विहीन देह समान है।” (ग्रंथालय में घुसो ... पढ़ो ... पढ़ो)

**प्यार भरे अक्षर :-** हमारे बुजुर्गों ने पढ़ने पर बहुत ज़ोर दिया है। ज्ञान को दस्तावेजों में सुरक्षित रखने हेतु ‘अक्षर’ बड़े सहायक सिद्ध हुए। नागरिकता के विकास के साथ पत्ते, दीवारें, पत्थर, मिट्टी, गुफाओं की पहचान कराने वाले संकेत, चित्र आदि क्षीण हुए और तब लिपि का उदय हुआ। इस प्रकार ‘अक्षर’ हमारे पूर्वजों का अपूर्व अन्वेषण सिद्ध हुआ।

ऐसा माना जाता है कि ई.पू.105 में चीनी लोगों ने कागज़ की खोज की। काल क्रमेण अरब देश के लोगों ने कागज़ से कलाकारी करना शुरू किया। ऐसा कहा जाता है कि 10-12 वीं शताब्दी में कागज़ का आगमन भारत में हुआ। लेकिन ई.पू.1350 में ‘याज़वल्क्य स्मृति’ में कागज़ का उल्लेख मिलता है। ई.पू.360 में जन्मे अलेक्ज़ाण्डर के दूत, जब पंजाब प्रांत में थे, तब उन्होंने कागज़ के उत्पादन का उल्लेख किया है। जो भी हो लिपि, कागज़, मुद्रण, यंत्र, स्याही... ये सभी अक्षर क्रान्ति के विभिन्न सोपान हैं। ये दस्तावेजों के प्रचार-प्रसार की महत्वपूर्ण सीढ़ियाँ हैं।

पुस्तक, पत्रिकाओं का विस्तृत विश्लेषण, इस छोटे-से लेख में करना मुश्किल है। विवेक, विचार, विकास के उतार चढ़ाव का एक प्रमुख कारण है – ‘पुस्तकों की पढ़ाई’ जनसमुदाय के बौद्धिक, सांस्कृतिक संपत्ति के अर्जन में पढ़ने की महत्वपूर्ण भूमिका है। साहित्य से जो सांत्वना, समाधान प्राप्त होता है, वह अन्य किसी से संभव नहीं।

श्रेष्ठ कृति, जीवन की आकृति को सुन्दर बनाती है। विकृति को विलीन कर सुकृति का स्वागत करती है। जब जीवन को प्रकाशित करने के लिए पुस्तकें हैं तो अन्य राजभोग की वस्तु क्यों चाहिए? इससे बढ़कर अन्य संपत्ति नहीं। इससे बढ़कर आह्लादकारी आसक्ति और किसमें हो सकती है?

सन 1995 से 23 अप्रैल को यूनेस्को ने ‘विश्व पुस्तक दिवस’ के रूप में आचरण कर रहा है। ब्रिटेन के प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर का जन्म 23 अप्रैल को हुआ था। उनका निधन भी 23 अप्रैल (1616) को ही हुआ। इसलिए 23 अप्रैल को शेक्सपीयर की याद में ‘विश्व पुस्तक दिवस’ के रूप में मनाया जाता है। इस बार उनका 450 वीं जयन्ती वर्ष भी है।

यह विषादनीय है कि संतोष के साथ दुःख भी होता है। अब क्या हुआ है, बताइए? कैसी है यह पुस्तक संस्कृति? हमारी वर्तमान पीढ़ी को पुस्तकों से कितना प्रेम है? कितने प्रतिशत लोगों की अभिरुचि पढ़ने में है? आज ‘प्रदर्शनी संस्कृति’ के सम्मुख ‘देशी संस्कृति’ अपरिचित हो गई है, क्या यह असत्य है? ऐसा ही चलता रहा तो आगे क्या होगा? भगवान का ही भरोसा है।

देखना, सुनना, पढ़ना, लिखना... यह सब संवहन के माध्यम हैं। कबूतर, डाक, रेडियो, ट्रांसिस्टर, डी वी डी, फोन, मोबाइल ... ये सब समय की दौड़ के साथ कदम बढ़ाने वाले संवहन के संसाधन हैं। ‘तार’ अब छूट गया है। वैश्वीकरण से पढ़ने की संस्कृति संसार से लुप्त होती जा रही है। मुद्रित पुस्तकों के बारे में कई अफवाहें फैल गई हैं। मल्टी टच इंटरैक्शन तंत्रज्ञान के ‘आई-पैड’ में वार्ता-पत्रिका, ई-पुस्तक, पाठ्य पुस्तक, सिनेमा, जादू, संगीत, वीडियो-गेम ... सब लभ्य हैं।

मोबाइल ... कैमरा की सहायता से फोन में ही वीडियो देख सकते हैं। लैप-टॉप में ही पेपर पढ़ सकते हैं। पढ़ने के कई मार्ग

खुल गए हैं। पुस्तक पढ़ने की अभिरुचि क्षीण हो गई है। यह ई-समय की विडम्बना है।

क्या आप को पता है? निरन्तर 244 वर्षों से विश्व के ज्ञान पिपासुओं की प्यास को बुझाने वाला ब्रिटेनिका विश्वकोश का पुनर्मुद्रण रोक दिया गया है। अब उनसे पुस्तक का प्रकाशन नहीं होगा। अब उसका डिजिटल रूप मात्र उपलब्ध होगा। सूचना-जाल अत्यंत व्यापक हो गया है। लेकिन पुस्तकों के संग्रह को दीमक लग रहा है।

**पुस्तक का प्रकाश :-** वर्तमान वस्तुनिष्ठ संस्कृति के इस युग में घर, कार्यालय वस्तुओं के समूह का संग्रह नज़र आता है। लेकिन 'शो-केस' में पुस्तक मात्र दिखाई नहीं देते। सिन्यारो का मानना है कि "पुस्तक विहीन कमरा असुंदर अस्थि-पंजर समान है।" श्रेष्ठ पुस्तक सदा के लिए श्रेष्ठ मित्र हैं।

हमारी परछाई भी शाम को हमारा साथ छोड़ देती है। अंधेरा होते ही परछाई धुंधला हो जाती है। लेकिन पुस्तक रूपी मित्र हो तो मन के घर-मन्दिर में जीवनोत्साह की अक्षय आनंद भाव धारा बहती है। ग्रंथालय- "अंधेरे उजाले" के भाव लोक में विचरण करवाता है। हृदय का मंदिर खुशी से दुगुना हो जाता है। मन को रमाता और हृदय को गरमाता है। अंधविश्वास को विगलित करता तथा निराशा को भगाता है। पढ़ने से खुशी मिलती है।

शेली का कहना है - "कवि भावनालोक का अनधिकृत शासक होता है।" जागृति ही गुरु है। नहीं ज्ञाने न सदृशम। टेलीविज़न सामने होने पर भी दिमाग में एक विज्ञान डालने के लिए पुस्तक की आवश्यकता है। 'पुस्तक' ज्ञान का दीपक है। यह सत्य है कि इन्टरनेट में सूचना की भरमार है। पर सूचना अलग है, और ज्ञान अलग है। उत्तम पुस्तकों के द्वारा उपयुक्त, उन्नत ज्ञान अर्जित करना चाहिए। छोटों में पढ़ने की अभिरुचि कम होती जा रही है।

विद्युत माध्यम के इस युग में पुस्तकें

छोटों के लिए कुतूहलकारी हैं, मुद्रित अक्षर बड़ों के लिए हितकारी है।

सिर्फ यही सत्य है। भावकोश में संवेदना, सहानुभूति लाना है तो मुद्रित कागज़ों को पलटना ही होगा। पृष्ठों को पलटते हुए ध्यानमग्न होकर पढ़ना चाहिए। यहाँ-वहाँ आँसुओं को लाकर पढ़कर समाप्त करना चाहिए। मनोरंजन के साथ मनोविकास व सच्चरित्र के निर्माण के लिए सदग्रंथों का साथ चाहिए। पढ़ते-पढ़ते यदि सो भी गए तो भावकोशों में हल्की सी मुस्कान रह जाती है।

प्यार से विश्वास पाकर, प्रेम से गौरव पाकर ... कभी न कभी दूसरों के द्वारा प्राप्त पुस्तकों को रद्दीवाले के हवाले नहीं करना चाहिए। ज्ञान यदि रद्दी में गया तो हमारा जीवन भी त्याज्य वस्तुओं में शामिल होने का खतरा है।

गहरा-खोखला का चुनाव हमारे हाथ में है। लेकिन पढ़ने के शौक को कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए। जीवन को प्रकाशित करने वाले इन दीपों को बड़े जतन से जीवन भर साथ रखे। ज्ञान-सुधा का पान करते हुए पुस्तक प्रेम विकसित करें।



### हँसना मना है

सरदार जी के 60 वें जन्म दिवस पर उन के दोस्त ने पूछा केक पर बल्ब क्यों रखे हो?

सरदार केक पर 60 कैण्डल्स रखना मुश्किल है इसलिए 60 वोल्ट्स बल्ब रखा है।

वाँट एन ऐडिया सर जी।

\*\*\*\*\*

एक सरदार हनुमानजयन्ती पे मंदिर गया। पुजारी ने आरती दी।

सोचो सरदार ने क्या किया होगा ..... ?

.....

सरदार आरती का दिया बुझकर बोला हैपी बर्तडे हनुमान जी।



# शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य



रोहिणी पी.पै

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

भारत वर्ष में हम अनेक त्योहार मनाते हैं। जैसे रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, वसंत पंचमि ..... इत्यादि। परंतु शिवरात्रि शब्द में यह रात्रि रूपी शब्द क्यों आता है? यह कौनसी रात्रि है? यह प्रति दिन आने वाला दिन-रात वाली रात्रि नहीं है। सृष्टि चक्र के अंत में जब सारी सृष्टि में अज्ञान रूपी अंधकार की रात्रि आ जाती है तब निराकार परम ज्योति स्वरूप में एक साधारण मानव शरीर का आधार लेकर ज्ञान और राज योग की शिक्षा द्वारा कलियुग रूपी रात्रि को सत्य युग रूपी दिन में परिवर्तन करते हैं। शिव परमात्मा का दिव्यावतरण को ही हम महाशिवरात्रि के रूप में मनाते आये हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है- “ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश” अर्थात् जब ज्ञान रूपी सूर्य परमात्मा संसार में अवतरित होते हैं उनके ज्ञान रूपी प्रकाश से अज्ञान, अंधकार का विनाश हो जाता है।

यही है महाशिवरात्रि का रहस्य।

शिवरात्रि के दिन भक्त लोग भक्ति मार्ग में उपवास और जागरण करते हैं। लेकिन सोचने की बात है कि क्या एक दिन भोजन त्यागने से और एक रात्रि जागरण करने से परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी? इसके पीछे क्या आध्यात्मिक रहस्य है उसे भी हमें समझना होगा।

उपवास- उप का अर्थ है समीप, वास का मतलब रहना तो उपवास यानी बुद्धि के द्वारा परमात्मा के समीप रहना अर्थात् प्यार से परमात्मा को याद करना। जागरण का अर्थ है अपने अज्ञान से जागृत हो जाना और स्वयं का परिचय प्राप्तकर दुर्गुण, बुरी आदत, बुरे व्यसन और दुर्जन संग से दूर रहना ही वास्तव में सच्चा जागरण है।

तो अब महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को याथार्थ रीति समझकर सच्ची शिवरात्रि मनायें।



## खुलकर हँसिए

लडकी अपने बॉयफ्रेंड को नाराज करने के बाद एस एम एस पे मनाती ही  
पहली बार - सॉरी  
दूसरी बार - सॉरी  
तीसरी बार - प्लीज एक बार बात करों  
चौथी बार - प्लीज रिप्लाइ करो जान  
पाँछवीं बार - इतना नाराज मत हो

छटी बार - मैं मर जाऊँगी अगर तुमने बात नहीं की  
सातवीं बार - दफा हो जाओ 100 लडके घूमते हैं तेरे जैसे ..... सर पे ही चढ़ा जा रहा है। भाड में जा .....  
लडका:- सॉरी डियर, बैलेन्स नहीं था।  
लडकी:- ओई, कोई बात नहीं लव यू जान

## आप ए जाने



संग्रह - निर्मला.एच,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक,  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि

एक परब्रह्म - भगवान  
दो आयन - उत्तरायन, दक्षिणायन  
दो पक्ष - शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष  
त्रिमूर्ती - ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर  
त्रिकार्य - सृष्टि, स्थिति, लय  
त्रिकरण - काया, वाचा, मनसा  
त्रिलोक - स्वर्ग, मर्त्य, पाताल  
त्रिगुण - सात्विक, राजसिक, तामसिक  
त्रिकाल - भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यतकाल  
चार युग - कृत, त्रेता, द्वापर, कलि  
चतुर्वेद - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद  
चार आश्रम - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास  
पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष  
चतुर्धाम - बदरी, पुरि, रामेश्वर, द्वारका  
चतुरोपाय - साम, दान, भेद, दंड  
पंचमहाभूत - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश  
पंचवायु - प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान  
पंचेन्द्रिय - आँख, कान, जीभ, नाक, चर्म  
पंचांग - तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण  
पंच प्रयाग - देव प्रयाग, कर्ण प्रयाग, रुद्रप्रयाग, नंदप्रयाग, विष्णु प्रयाग  
पंच पतिव्रता - अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मडोदरी  
शड्वैरी - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य  
शडुतु - वसंत, ग्रीष्म, वर्ष, शरद, हेमंत, शिशिर  
सप्त स्वर - स रि ग म प द नि  
सप्त क्षेत्र - अयोध्या, मथुरा, गया, काशी, कांचि, आवंतिका, पुरि, द्वारका  
तिरुपति के सप्त गिरि - शेषाचल, वृषभाचल, गरुडाचल, अंजनाद्रि, नारायणाद्रि, सिंहाचल, वेंकटाद्रि  
सप्त चिरंजीवि - अश्वत्थाम, बलि, व्यास, हनुम, कृपा, विभीषण, परशुराम  
सप्त ऋषि - विश्वामित्र, वशिष्ठ, कश्यप, भारद्वाज, अत्रि, गौतम, जमदग्नी  
अष्ट दिक्पालक - इन्द्र, अग्नि, यम, नियति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान  
अष्ट दिशा - पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैरुत्य, पश्चिम, वायुव्य, उत्तर, ईशान्य,  
नव ग्रह - सूर्य, चन्द्र, मंगल (अंगारक), बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु  
दशोपनिषत्त - ईशा, केन, कठ, प्रष्ण, मंडूक, मांडुक्य, तैत्तीरिय, ऐतरेय, छान्दोग्य, ब्रह्दारण्यक  
दशावतार - मत्स्य, कूर्म, वराह, नारसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि



# अपने इर्दगिर्द



**विद्या एम सुवर्ण**

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

कई साल पहले हम मुम्बई में रहते थे। उस वक्त मेरी बेटी नमी लगबग दस महीने की थी। एक रविवार शाम को मैं और मेरे पति बच्ची के साथ घूमने निकले और घर से थोड़ी दूर के एक बगीचे में गये। मेरी बेटी तो बहुत खुशी से बगीचे में खेल रही थी, तब एक गुब्बारे बेचने वाला आया। गुब्बारे को देख कर मेरी बेटी ने वो चाहिए करके इशारा करने लगी। एक गुब्बारे को उसे खरीद कर दिया तो बहुत खुशी से खेलने लगी।

थोड़ी देर वहाँ बैठ कर हम घर वापस चलने लगे। बच्ची तो मेरे पति के हाथ में थी और गुब्बारा मेरे हाथ में। रास्ते में आते समय मुझे कुछ सामान लाने के लिए दुकान जाना था। मैंने अपने पति से कहा, “आप आगे जाइए, मैं सामान लेकर आती हूँ।” मैं दुकान गई और पति बच्ची के साथ घर चले गये।

जब मैं दुकान में सामान ले रही थी तब एक 7-8 साल का लड़का मेरे हाथ में गुब्बारा देखकर, “आंटी वो गुब्बारा मुझे दे दो, मेरी एक छोटी बहन है उसको खेलने के लिए चाहिए। दे दो आंटी।” करके बोलने लगा। मैंने कहा “अगर इसे मैं तुझे दूँगी तो मेरी बेटी रोने लगेगी।” ऐस कहकर सामान और गुब्बारा दोनों उठाकर मैं सीधा घर चली आयी। घर आते ही मैंने अपने पति से कहा कि एक लड़के ने अपनी बहन के लिए गुब्बारा माँग रहा था लेकिन मैंने दिया नहीं।

तब मेरे पति ने कहा - “एक छोटे बच्चे ने गुब्बारा माँगा तो तुझे जरूर देना था। हमारी बेटी को हम कल भी गुब्बारा खरीदकर दे सकते हैं। अब वह सो भी गई है और उठने

के बाद उसको गुब्बारे की याद भी नहीं होगी।” यह बात सुनकर मुझे ऐसा लगा कि कोई फटाक से मेरे मुँह पर तमाचा मारा हो।

सोचने लगी कि हर व्यक्ति क्यों इतना स्वार्थी बन जाता है? “अपने और अपने परिवार के अलावा वह क्यों नहीं सोच पाता?” मुझे लगा कि मैं इतनी हृदयहीन कैसे बन गई। एक छोटे बच्चे की छोटी सी आशा को भी पूरा करने के लिए मेरा हृदय विशाल नहीं रहा तो “वसुधैव कुटुंबकं” जैसे शब्द पुंजों की अहमियत क्या हो सकती है?

अब भी जब बगीचे में गुब्बारा बेचनेवाले को देखती हूँ तो उस छोटे बच्चे का मासूम चेहरा मेरे सामने आता है और दिल को बहुत चुभता है।



## माँ का सहारा

किसी ने माँ के कंधे पर सर रख के पूछा- माँ कब तक अपने कंधे पर सोने देगी ?  
माँ ने कहा - जब तक लोग मुझे अपने कंधे पर न उठा लें।

एक छोटे से तिनके का भी कभी निंदा न करना क्योंकि वो तिनका आंख में आ गिरे तो कितनी गहरी पीड़ा होती है।

# शिकार हूँ या शिकारी



**चंद्रशेखर.डी.एम**

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप),  
क्षेत्रीय कार्यालय मंगलूर

मैं कर्नाटक की पश्चिम घाटी की पर्वत श्रेणी में बसा हुआ कोडगु जिले के भागमंडला नामक गाँव का निवासी हूँ। यह कावेरी नदी का उद्गम स्थान होने के साथ - साथ तलकावेरी नामक एक प्रसिद्ध यात्रा स्थल भी है। इस छोटे से गाँव में हजारों यात्रार्थी आते रहते हैं। यहाँ अक्तूबर माह में तुला संक्रमण के समय मेला लगता है। इसे कावेरी संक्रमण भी कहा जाता है। कावेरी कोडगु मूल निवासियों की कुलदेवता होने के नाते - बहुत माड़ना रखती है और उस दिन कोडगु के सारे लोग वहाँ इकट्ठे हो जाते हैं।

मेरा गाँव इस मलेनाडु के घने जंगलों के बीच में है। जब मैं छोटा था, इन्हीं घने जंगलों को (अभी आरक्षित अरण्य /वन्य जीवी संरक्षण केन्द्र) कोडगु निवासियों में कृषि कार्य के लिए हर एक परिवार को 200 एकड़ का आबंटन हुआ था और इसके लिए 99 साल का लीस अग्रीमेंट भी था। जंगलों में इलायची उगाने के लिए सरकार ने अनुमति भी दी थी सरकार के अनुमोदन के तहत हर एक कृषिक ने अगर एक एकड़ जमीन पर कृषि की है तो चार एकड़ छोड़ना था। ऐसे करने से जंगल का नाश भी नहीं होता, साथ साथ कृषि भी होती रहेगी, और जंगली जानवरों को भी कोई दिक्कत नहीं। पर जंगली जानवरों से निपट कर अपने इलायची की फसल उगाना और बचाना भी एक चुनौती थी।

इलायची की फसल के संरक्षण में सुअर, बंदर, हिरन, जंगली भैंस और हाथी आदि जंगली जानवरों से खतरा था। इसी कारण उन दिनों सरकार ने कृषिकों को स्वयं और फसल के संरक्षण हेतु बंदूक रखने के लिए लाइसेन्स भी दिया था। लेकिन लोग अपनी सुरक्षा के अलावा अपनी चपलता के लिए



शिकार भी करते थे। यह जंगल और गाँव के बीच कम से कम 10-15 मील की दूरी थी। निर्जन प्रदेश होने के कारण लोग अपने काम के बाद रात को शिकार के लिए निकल पड़ते थे।

रात को शिकार करनेवाले शिकारी को होशियार और धैर्यशाली होना पड़ता था, क्यों कि घने जंगलों में सिर्फ एक टार्च लैट के ज़रिए शिकार करना था, अगर पाँव के नीचे विष जंतु आदि होता तो उसका भी खतरा था, ऐसी स्थितियों में सिर्फ समान मनस्क धैर्यशाली लोग ही रात को शिकार पर निकलते थे।

उन दिनों में इलायची बागानों में काम करने के लिए ज्यादा मज़दूरों की आवश्यकता थी। लेकिन कोडगु जिले में उतनी आबादी ना होने के कारण, पास के दक्षिण कन्नड जिले से मज़दूरों को बुलाते थे। दक्षिण कन्नड जिले में जून तक चावल की कटौती का सारा काम खतम हो जाता था। इसके बाद

## मंगल निधि

वहाँ कोई काम न होने के कारण, लोग इलायची बागानों में काम करने के लिए निकलते थे। इन लोगों को लाने के लिए एक ठेकेदार रहता था, उनके द्वारा कई गुठों में 50-60 मजदूरों की टोली आती थी। लेकिन कुछ लोग यहाँ के प्रतिकूल मौसम के कारण बीमार पड़ जाते थे और कुछ लोग साँप आदि विष जंतुओं के काटने या मलेरिया जैसी बीमारी के शिकार बनजाते थे। जो अनुभवी थे वे टिकते थे। बाकी सब लौट जाते थे। अंत में 50-60 की टोली 10-20 तक सिमट जाती थी। जो हर साल आकर सभी काम में परिणत थे, वे नये लोगों को सिखाते थे। क्योंकि इलायची बागान का काम बहुत नाज़ूक किस्म का है। अगर थोड़ा भी इधर - उधर हुआ तो फसल अच्छी नहीं होती।

अनुभवी मजदूर जो है, वे शिकार में भी रुचि रखते थे और अपने मालिकों को भी शिकार के लिए उकसाते थे या अपने मालिक के बंदूक लेकर खुद शिकार के लिए निकल जाते थे। एक बार मांसाहार से लगाव हुआ तो फिर बार बार शिकार के लिए निकलने का मन करता है। इन इलायची बागानों में मजदूरों के काम का समय और खाने पीने का समय भी अलग था, क्योंकि जंगलों के बीच बनाई गई झोंपडियाँ गाँव से बहुत दूर रहती थी, इन मजदूरों को खाना बनाने के लिए एक आदमी वहाँ रहता था, बाकी सब काम के लिए चले जाते थे। काम का जगह भी जंगलों के बीच दूर पर थी, और बारिश की वजह से दोपहर का खाना नहीं ले जाते थे। सुबह एक बार खाना खा कर साढ़े सात बजे काम के लिए निकले तो दोपहर के 3 बजे तक अपने कैंप पर वापस आकर शाम के 6.30 बजे तक खाना खा लेते। उसके बाद ताश खेलने वाले खेलते थे, या सो जाते थे। इसी समय शिकार पर जानेवाले शिकार पर जाते थे।

ऐसे ही एक शिकार से संबंधित एक रोमांचकारी किस्सा मैं आप को बताना चाहता

हूँ। कॉलेज की पढ़ाई खतम होने के बाद मैं गाँव में पापा को कृषि संबंधी काम में मदद कर रहा था, उसी समय पापा ने हमारा इलायची बागान का काम देखने की जिम्मेदारी मुझे सौंप दी। इलायची कृषि से संबंधित कोई जानकारी न होने के कारण मैंने सोचा कि यही मौका है सीखने का।

जुलाई माह के 15 तारीख के बाद चावल आदि सामग्री के साथ मैं और हमारे मजदूरों की टोली एक महीने के लिए इलायची बागान की तरफ रवाना हुए। पिछले साल घने जंगल के बीच बनाया हुआ हमारा शेंड रहने लायक नहीं था। उस की मरम्मत हो जाने तक वहीं जंगल में रहने वालों के साथ हमें रात गुज़ारना पड़ा। दूसरे दिन शेंड की पूरी मरम्मत होने के बाद हम अपना ठिकाना बदल पाए। खाना बनाना, इलायची सुखाने के लिए लकड़ी का इंतजाम आदि काम में और एक दिन कट गया। तीसरे दिन से हमारा काम शुरू हुआ। मुझे कृष्णाप्पा नाम का एक अनुभवी ठेकेदार सारा काम सिखा रहा था।

दो-तीन दिन काम के बोझ से किसी का मन कही नहीं भटका। पर चौथे दिन खाने में स्वाद न होने के कारण शिकार पर जाने के लिए मजदूर मुझे उक्साने लगे। मुझे तो सब लोगों का संभालना था। इसलिए दिन में ही शिकार पर निकला और छोटे-छोटे शिकार किया। अकेले दूर जाना भी मुश्किल था। क्योंकि मुझे उस जंगल के भीतर जाने वाला रास्ता भी पता नहीं था। इसलिए मैंने रास्ते जानने वाले मजदूरों को मेरे साथ आने के लिए कहा। लेकिन डर के मारे कोई तैयार नहीं थे। जब दो तीन दिन से खाने में मांस का थोड़ा स्वाद मिला तब एक एक करके सब मेरे साथ शिकार पर जाने के लिए तैयार हो उठे।

यह बात मेरे पिता तक पहुँची तो वे दूसरे दिन वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने बताया कि काम के समय मैं शिकार पर मत जाना और जाना है तो रात को ही जाना।

## मंगल निधि

रात को शिकार करने की रीत-रिवाज कुछ अलग ही होता है। यहाँ शिकारी को बहुत होशियार और अनुभवी होने की आवश्यकता है। जंगली जानवरों को अंधेरे में मारना पड़ता है। इसलिए सिर पर एक टार्च लाइट बांधकर उसकी रोशनी जंगल में फैलाना है। जब रोशनी के आगे जानवर आता है तब उसे देखते ही उसके दोनों आँखें प्रज्वलित हो जाते हैं। शिकार को उन प्रज्वलित आँखों के बीच अपना निशाना लगाकर बंदूक चलाना पड़ता है। लेकिन बंदूक चलाते वक्त किस जानवार पर कौनसी गोली चलाना है, वह सिर्फ आँखों के बीच का अंतर देखकर अनुभवी शिकारी निर्णय लेता है। इसके अलावा जानवरों की जाति के अनुसार आँख की चमक जैसे लाल, पीला या हरा होती है, इसलिए रात को शिकार पर जानेवाले बेहद अनुभवी और शिकार के समग्र जानकार होते हैं। नहीं तो कभी कभी पालतू जानवर जैसे गाँय, कुत्ता या बिल्ली भी मारे जाते हैं।

उस दिन पापा के आने के बाद रात को शिकार पर जाने के लिए कुछ मजदूर पीछे हट गये। क्योंकि रात के अंधेरे में शिकार पर जाते वक्त सिर्फ आगे जाने वाले शिकारी के सर पर लाइट होता है। बाकी लोगों को उसके पीछे जाना पड़ता है। उस समय नीचे ज़मीन पर जंतु या कांटे और पत्थर से घाव होने की संभावना अधिक है, इसके अलावा अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं देता। इसलिए रात को शिकार के लिए सिर्फ हिम्मतवाले ही जाते हैं। उस दिन हमने रात के आठ बजे के बाद जाने का निर्णय लिया। मेरे साथ सिर्फ दो आदमी आए थे। रात के शिकार में और एक बात है कि, कुछ जानवर लाइट देखकर अपनी आँखें बंद करके भागना शुरू करते हैं। कुछ जानवर लाइट को एक बार देखने के बाद उस तरफ नहीं देखते हैं। कुछ जानवर सिर्फ देखते ही रह जाते हैं ऐसे मौके पर शिकारी अपना काम कर लेते हैं। उस दिन हमें एक जंगली सुअर मिला था।

जो मेरे साथ आये थे वे खुशी से झूम उठे। और रातभर जश्न मनाये। पापा भी खुश हुए। क्योंकि मजदूरों के सामने बेटा जो हीरो बन गया था।

दूसरे दिन भी शिकार पर जाने के लिए मजदूर तैयार होने लगे। लेकिन पापा ने कहा कि हर रोज शिकार पर जाना सेहत की दृष्टि से अच्छा नहीं, और इसके अलावा पिछले दिन का मांस और भी बचा था। इसलिए अगले दिन जाने के लिए कहा, सभी मजदूर निराश होकर सो गए।

तीसरे दिन शाम तक काम निपटाने के बाद सब शिकार के लिए फिर से तैयार होने लगे। मैं अपने आपको एक बहुत बड़ा शिकारी मानने लगा था। पापा की सूचना के अनुसार उस दिन हम रात को आठ बजे के बाद पहले दिन के विपरीत दिशा में शिकार के लिए निकले। आज मेरे साथ मजदूरों का पूरा पलटन था। इनकार करने के बावजूद मेरे साथ कम से कम 11 लोग निकले थे।

हम अपने रहने के जगह से कम से कम 1½ कि मि तक चल चुके थे। उसी समय मेरे टार्च लाइट से 50 मीटर दूरी पर जलते हुए दो लाल आँखें दिखाई दीं। शिकार करते समय हम देखते हैं कि आँखें किस जानवर की हैं। आँखों का रंग और आकार और भूमि से उसकी ऊँचाई के आधार पर जानवर को पहचानते हैं। पर उस वक्त मुझे पहले अंदाजा ना मिला। मैंने थोड़ा और आगे बढ़ा तब जानवर की आँख ज़मीन से ऊपर उठी, कम से कम आठ फूट तक। मुझे समझ में नहीं आया कि, यह कौनसा जानवर है। ऐसे समय पर शिकार करनेवाले पूरी जानकारी के लिए एक बार अपना टार्च बंद करके दूसरी बार जलाकर पहचान लेते हैं और उसके साथ अपनी साथियों से भी पूछ लेते हैं कि वह कौन सा जानवर है, क्योंकि उन्हें पीछे से पूरा जानवर दीखता है। जब मैंने पीछे मुड़कर अपनी साथियों से पूछने के लिए देखा तो वहाँ कोई नहीं था। सारे



## मंगल निधि

मज़दूर भाग चुके थे। मैंने धीरे से आगे देखा तो सर्प (साँप) की आवाज सुनी। तब तक वह मेरी ओर बढ़ना शुरू कर चुका था। वह इतना पास आ चुका था कि कुछ करने के लिए मुझे समय ही नहीं मिला। अगर मैं बंदूक चलाता तो भी चूक जाता, क्योंकि साँप पल भर में झुक जाता है। तब मेरे मन में पापा का बताया हुआ एक आपातकालीन उपाय याद आया। सर से टार्च उतारकर पास के एक छाटे से पेड पर जलते हुए ही बांधकर भागने लगा। बस, मैं 25 मीटर भागा होगा, उसी समय मेरे टार्च लाइट पर साँप ने आक्रमण किया और पल भर में टार्च चकनाचूर हुआ। अपनी जान बचाने के लिए मैं पीछे देखे बिना भागा। मेरे हाथ में सिर्फ एक बंदूक के आलावा कुछ भी नहीं था।

मुझे छोड़कर भाग आने के कारण टेंट पर सारे मज़दूरों को मेरे पापा लेफ्ट-राइट करा रहे थे पापा बहुत चिंतित थे और मुझे दूँढने के लिए तैयार भी हो रहे थे। मैंने टेंट

से कम से कम आधा किलो मीटर दूरी पर ही आवाज दी। उसके बाद पापा ने लाइट लेकर मेरी मदद के लिए आ पहुँचे। रात के एक बजे के करीब मैं अपने टेंट तक आ पहुँचा।

इस रोचक घटना के बाद पापा ने बताया कि अगर शिकार पर जाना है तो जो भी बहादूर मज़दूर है सिर्फ उन्हें लेकर जाना। उसके बाद मुझे भी एक सीख मिली कि अगर रात में शिकार पर जाना है तो अपने लिए खुद का एक टार्च और एक छोटा सा हथियार को भी साथ में रखना चाहिए।

अगले दिन हमने घटना स्थल पर पापा के साथ परखने के लिए गये तो देखा कि, अपना लाइट पूरा चकनाचूर और आस-पास के पौधे और इलायची के बागान भी ध्वस्त हो चुका था। ज़रा सोचिए टार्च के बदले अगर साँप को मैं मिल जाता तो क्या हाल हुआ होता?



## समय का सदुपयोग

जीवन में सफलता का रहस्य समय का सदुपयोग करने पर ही निहित है। इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग अवश्य करता है। उन्नति के शिखर पर पहुँचता है। संसार के सभी अनुभवी विद्वानों ने समय का महत्व को समझने का प्रयास किया है। यदि धन खो जाये तो पुनः प्राप्त कर सकते हैं। यदि स्वास्थ्य खो जायें तो भी उसकी प्राप्ति की जा सकती है। परन्तु समय यदि एक बार हाथ से निकल जाएँ तो पुनः लौटकर कभी नहीं आ सकता। समय एक अत्यमूल्य धन है। समय का सदुपयोग करना ही मानव के लिए कल्याणकारी है।



**सुमा कश्यप**

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर

### हँसना मना है

पुलिस:- यह मेमना और छोटा मेमना किसका है ?

सरदार:- मेमना किसका है पता नहीं पर यह पता है कि छोटा मेमना किस का है।

पुलिस:- बता दो किस का ?

सरदार:- मेमना का ही।



मोबाइल फोन बिज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में कीगई अभूतपूर्व प्रगति की एक चमत्कारी परिणाम है। मोबाइल फोन द्वारा दुनियाँ भर में लाखों लोगों के लिए जीवनयापन का एक रास्ता बना हुआ है। मोबाइल फोन वास्तव में एक बहुत आकर्षक वस्तु है। इस का विकास भी बहुत तेजी से हो रहा है।

हमारे देश में मोबाइल फोन का प्रचलन एवं संचालन मध्य 90 के दशक में शुरू हुआ। उस समय यह सिर्फ अमीरों के लिए ही सीमित रहा।

इसके विभिन्न कारण थे। महँगा कॉल दर, महँगा मोबाइल सेट और सेवाप्रदाताओं की सेवा केवल महानगरों तक सीमित था। एक महत्वपूर्ण कारण और भी था कि देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ नहीं थी और

इस देश के सबसे बड़ी उपभोक्ता मध्यम वर्ग के लोग थे जो अभी प्रगति पथ पर थे।

नई सदी में मोबाइल फोन की बिक्री में काफी वृद्धि हुई मगर आनेवाले कॉल पर शुल्क होने के कारण सेल फोन मुख्य रूप से अमीरों और व्यापार से जुड़े हुए लोगों तक ही सीमित रहा। मोबाइल फोन एक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया था।

भारत में मोबाइल फोन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब सरकार ने आनेवाले कॉल मुफ्त कर दिया। इसके बाद जनता द्वारा इसे बड़ी मात्रा में अपनाया गया। चाहे इसकी आवश्यकता आम आदमी को हो या ना हो। काल दरों में कटौती, हैंड सेट की कीमतों में कमी के कारण यह आम आदमी तक पहुँच गया। मोबाइल फोन के क्रांति का एक सबसे बड़ा उदाहरण हमारे ग्रामीण इलाका है। अभी भी भारत के कई ग्रामों में बिजली नहीं है, पानी की व्यवस्था नहीं है, सड़कों



अक्षता

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, चिक्कमगलूर

की सुविधा नहीं है, पर एक आश्चर्य की बात यह है कि वहाँ भी मोबाइल फोन अच्छी तरह से काम कर रहा है। इसलिए लोग इसे अपना रहे हैं।

मोबाइल फोन का उपयोग केवल बात करने के लिए ही सीमित नहीं है, यह वीडियो बनाने में, रिकार्डिंग करने में भी सहायक है। मोबाइल

फोन से हम जानकारी डाउनलोड भी कर सकते हैं।

मोबाइल फोन न केवल मानव जाती के कल्याण के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है, बल्कि इसका दुरुपयोग से हमारे समाज पर गंभीर असर पड़ रहा है। मोबाइल फोन के दुरुपयोग से अनेक अमानवीय गतिविधियाँ सामने आ रही हैं। अच्छा या बुरा एक सिक्के के दो पहलू है, मोबाइल फोन के सबसे अच्छे उपयोग करना उपयोगकर्ताओं पर निर्भर है।



### खुलकर हैंसिए

एक औरत अपने कुत्ते के साथ फल की दुकान गई।  
दुकानदार:- मेडम आप का कुत्ता मेरे फल खा रहा है।  
औरत:- टॉमी, धोए बिना फल मत खाया करों।

## रक्त दान



**वीणा सी.शेखर,**  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।

विभिन्न प्रकार के दान में से रक्त दान को एक श्रेष्ठ दान माना जाता है। यह कई व्यक्तियों की जान बचाने का पुण्य कार्य ही है। कब कहाँ किसे रक्त की आवश्यकता पड़ जाये यह कोई नहीं जानता है। रक्त किसी भी दुर्घटना, ऑपरेशन, प्रसव या रक्त कैंसर अथवा एनीमिया से ग्रसित लोगों को कभी भी जरूरत पड़ सकता है। रक्त को कृत्रिम रूप से तैयार नहीं किया जा सकता है, ना ही इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, इसकी उपलब्धि केवल रक्त दान के माध्यम से ही संभव है। इसी कारण रक्त दान को महा दान कहा जाता है। जानिये कुछ महत्त्वपूर्ण बातें रक्त दान के बारे में.....

1. कोई भी स्वस्थ व्यक्ति जिनकी आयु 18 से 60 वर्ष के बीच है, तीन माह के अंतराल पर रक्त दान कर सकता है।
2. रक्त दान से किसी प्रकार की शारीरिक हानि नहीं होती है ना ही बदन में कमजोरी आती है।

3. रक्त दान के दौरान आपको अपने रक्त ग्रुप का पता चल जाता है।
4. एक व्यक्ति एक बार एक यूनिट यानि 450 मि ली रक्त दान कर सकता है। जिसमें महज 10 से 15 मिनट का समय लगता है।
5. रक्तदान किसी भी मान्यता प्राप्त रक्त बैंक या फिर रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा प्रायोजित रक्त दान कैंप में किया जा सकता है।
6. रक्त दान के पश्चात आपको एक प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है, इस प्रमाणपत्र के आधार पर आप बाद में जरूरत पडने पर ब्लड बैंक से रक्त प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आपके द्वारा दान किये हुए रक्त से किसी जरूरतमंद की जान बच सकती है तो इस से बड़ा पुण्य का काम और क्या है ? इसलिए जब भी किसी को रक्त की जरूरत हो तो निःसंकोच रक्त दान करें। "रक्त दान महा दान है।"



## तकलीफ

इन्सान को तकलीफ तब नहीं होती जब कोई अपना दूर चला जाता है तकलीफ तो तब होती है जब कोई अपना पास होकर भी दूरियां बना लेता है।

आम लोगों के पास इच्छा और आशा होती है, पर आत्मविश्वासी लोगों के पास योजनायें और लक्ष्य होते हैं।

संग्रह : आर. महेश बाबु  
प्रवर्तन अधिकारी  
मडिकेरि जिला कार्यालय

# मानव विकास में विज्ञान का योगदान



त्रिवेणी आर.उळ्ळाल

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

नावों का प्रचलन था, किन्तु आज आधुनिक जलयानों द्वारा हजारों टन माल आसानी से दूसरे देशों तक भेजा जाता है।

विज्ञान से अनेक किस्म का प्रायोगिक ज्ञान हमें सुलभ लभ्य हो चुका है। विशाल प्रयोगशालाओं में अनेकानेक विषयों से सम्बन्धित प्रयोग किए जाते हैं और कई प्रकार के शोध एवं अनुसंधान निर्बाध गति से हो रहे हैं। हमारे देश में भी कई अनुसंधान प्रयोगशालाएं हैं। एक ओर तो मानवता के कल्याण हेतु अनुसंधान किया जाता है और दूसरी ओर अति महाशक्तियाँ संभाव्य युद्धों से निपटने के लिए अण्वस्त्र के निर्माण पर लगी हुई हैं।

ऐसे-ऐसे अण्वस्त्र व अन्य प्रकार के बम बनाये जा चुके हैं जो पल-भर में बड़े-बड़े नगरों का विनाश कर सकते हैं। जापान स्थित हिरोशिमा और नागासाकी पलक झपकते ही राख की ढेर में बदल गये थे। यह घटना दूसरे विश्व युद्ध के समय (1945) की है, जब उन नगरों पर अण्वस्त्रों का प्रयोग किया गया था। अब विश्व समुदाय परमाणुअस्त्रों द्वारा होने वाले विनाश के प्रति जागरूक हैं और संयुक्त संघ तथा अन्य कई संगठन इस बात पर प्रयत्न कर रहे हैं कि अण्विक प्रतिस्पर्धा पर रोक लगाया जा सके।

भारत विश्व शांति चाहता है और उसकी यही कामना है कि सभी देशों को अपने परमाणु हथियार नष्ट कर देना चाहिये या कम-से-कम भविष्य में उसके निर्माण पर रोक लगानी चाहिये।

इस प्रकार एक ओर तो विज्ञान के माध्यम से जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करके मानव निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है और दूसरी

विज्ञान ने मानव-जीवन को पूरी तरह से बदल डाला है। हमारे पहनने के वस्त्रों का निर्माण कारखानों में होता है। जिन मशीनों का हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं वे विश्व के अनेक भागों में निर्मित होते हैं। कुकर, कूलर फ्रीज, रेडियो सेट, टी वी, कैमरा, टेलीफोन, बेतार प्रणाली, दुरबीन और सूक्ष्मदर्शी तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक उपकरण आज मानव की सुख-सुविधाओं में शामिल हैं। मनुष्य अब हजारों मील दूर बैठे सम्बन्धियों और मित्रों से बातचीत, "वीडियो चाट" कर सकता है। ब्रह्मांड से ग्रहों-उपग्रहों के चित्र, इलेक्ट्रॉनिक पद्धति के कैमरों द्वारा हम पृथ्वी वासियों तक पहुँचा सकता है। पृथ्वी के निवासी करोड़ों मील दूर ब्रह्माण्ड में स्थित मंगल ग्रह की सतह को पृथ्वी पर ही देख सकते हैं।

भूमि, जल, वायुयानों, द्वारा आज दुनियाँ की दूरी काफी हद तक कम हुई है। लोग दिल्ली से न्यूयार्क चंद्र घन्टों में पहुँच जाते हैं।

हमें ज्ञात है कि मध्यकाल में व्यापारियों के लम्बे-चौड़े काफिलें राजस्थान और इरान के रेगिस्तानों को पार करके ग्रीस और तुर्की जैसे दूरस्थ स्थानों को जाया करते थे। अपने माल बँचने हेतु मनुष्य हजारों मील की यात्रा पैदल या जानवरों पर सवारी करते हुए किया करते थे। उस समय नदियों व समुद्रों की यात्रा के लिए केवल

## मंगल निधि

ओर परमाणु व अन्तरिक्ष में वार करने वाले विनाशकारी अस्त्रों के निर्माण में प्रयत्नशील रहकर मानव जाती के विनाश में सहायता कर रहा है।

बात सिर्फ यही नहीं है। आजकल का मानव बहुत लोभी बन गया है। वह अपने पूर्वजों की तरह नहीं हैं, जो सादा जीवन में उच्च आदर्श व विचार पर विश्वास रखते थे। धार्मिक थे और ईश्वर को सर्व-शक्तिमान मानते थे और परमात्मा से डरते थे। किन्तु आज का आधुनिक मानव उन महान जीवन मूल्यों को प्रायः भूल चुका है। विज्ञान ने उसके विचार को दूर तक प्रभावित किया है। वह पहले की तरह अब चिन्तामुक्त व्यक्ति नहीं रहा है। बनावटी जिन्दगी में उसका विश्वास बढ़ता जा रहा है और जीवन की बाह्य सुख-सुविधाओं को ही वह ऐश्वर्य मानने लगा

है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विज्ञान ने प्रचीन जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में अत्यन्त घातक भूमिका निभाई है।

अगर मनुष्य मानवजाति के भविष्य के बारे में सोचता है तो उसे विनाश के मार्ग को छोड़ना ही होगा। यदि वह एक विवेकशील मनुष्य की तरह काम करने लगे और अण्वस्त्रों का निर्माण बन्द कर दे तो धरती फिर से स्वर्ग बन सकती है, अन्यथा विनाश का यह चरम रूप पृथ्वी को मानव विहीन और जीवन विहीन बना देगा। इस प्रकार विज्ञान एक ओर तो वरदान की भूमिका निभाता है, दूसरी ओर यदि इसका दुरुपयोग किया जाए, तो यह अभिशाप बन जाता है।



## शब्द बंध

	1				2	
3					4	5
			6		7	
8		9			10	11
12			13		14	
			16			
17		18			19	
		20				

**श्रीमती अनुराधा.के**  
सहायक निदेशक (रा भा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

### बाए से दाए

- संदेह है ही नहीं, यह सब से बड़ा शिव है। (4)
- आदर्श व्यक्ति के सामने प्रकट हुआ भगवान (3)
- हूँ मैं एक कोमल पुष्प (3)
- माँ का दिल का प्यार (3)
- नवोदित दिवस (4)
- है तो ये नया घर (4)
- अभिमान से मृदुत्व का एहसास दिलाने का नाटक (4)
- परिवर्तन का है ये जमाना (4)
- तुला राशि ने किया परिक्रमा
- पैदा होते ही सबको दिखनेवाली माता (3)
- प्रिया को प्यार से पुकारा (3)
- लगा दो व्यय आदि का अंदाजा (5)

### ऊपर से नीचे

- महा दिन पर नमन किया हुआ चित्त (2)
- भगवान विष्णु के पत्नी रमण का साथ दिया। (2)
- पीड़क व्यक्ति का निग्रह किया (3)
- रति के साथ रमित अंधकार (3)
- चुग लिया है किसी के दिल (2)
- छेड़ा हुआ राग (2)
- राज्य के मंत्री का और एक नाम (3)
- बातों बातों में संपन्न चर्चा (3)
- अनुमान से आया भाई (3)
- सरसों या एक जौ की तौल (2)
- अच्छा खासा खा पीकर यह मिला है (2)
- मन में होनेवाली मिथ्या धारणा (3)
- है ये शाश्वत का रूप (2)
- अवधि भाषा के - "साथ" (2)

शब्द बंध का  
हल पृष्ठ  
संख्या 58

# मनुष्य का दिमाग और कंप्यूटर



**एन.गुरुप्रसाद**

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर

मनुष्य का दिमाग सचमुच एक अद्भुत सृष्टि है। वैज्ञानिकों के तहत मनुष्य के दिमाग में दो हिस्से होते हैं। एक जागृत स्थिति, दूसरा सुप्त स्थिति। सुप्त प्रज्ञा की ताकत और उसका परिमाण भारी एवं दीर्घ होते हैं। जागृत दिमाग का परिमाण छोटा और ताकत भी कम होता है, मगर रोजाना जिन्दगी से जुड़े सारे काम-काज, प्रेरणा, सोचने-संभालने का काम, सब जागृत दिमाग ही करता है।

कुछ विशेषज्ञों ने अपने संशोधन द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि मन की सुप्त स्थिति का सही इस्तेमाल करने पर हम कमाल और अद्भुत परिणाम पा सकते हैं। यह कितना सच है या झूट, इसे थोड़ी देर के लिए भूल-कर मैं कुछ विषयों का प्रस्ताव करना चाहता हूँ।

हमारे आधुनिक कंप्यूटर को लिया जाए तो उसकी रचना बिलकुल हमारे दिमाग से सौ प्रतिशत मिलता-जुलता है। उस में भी तात्कालिक स्मरण और शाश्वत या स्थिर स्मरण व्यवस्था का दो हिस्से हैं। यहाँ भी तात्कालिक स्मरण व्यवस्था की सहायता से कंप्यूटर पर सारा काम होता है, उसी के इस्तेमाल से हमारा रोजाना काम-काज हो पाता है। मगर उसकी ताकत और परिमिति कम ही है। दूसरी तरफ शाश्वत व स्थिर स्मरण व्यवस्था की परिमिति और ताकत ज्यादा होती है। मगर एक बात तो कहना ही पड़ेगा कि जितने भी ताकतवर और बड़ा क्यों न हो स्थिर स्मरण व्यवस्था तात्कालिक स्मरण व्यवस्था



का काम तो नहीं कर सकता है, है ना? उसी तरह हमारे दिमाग की जागृत स्थिति या हिस्सा परिमाण में जितना भी बड़ा क्यों न हो मगर उससे वह काम नहीं करवा सकते हैं, जो सुप्त-दिमाग कर सकता है। दूसरी बात, कंप्यूटर की शाश्वत/स्थिर स्मरण व्यवस्था में हम विषय संग्रह करके रखते हैं, और कंप्यूटर के काम-काज से जुड़े कार्यक्रम मिसिल (प्रोग्राम फाइल्स) भी संग्रह हुए होते हैं। उसी तरह संग्रह

करने के लिए रचाया गया है, और वहाँ भी मानव शरीर के काम-काज से जुड़े हुए कार्यक्रम, संग्रह हुए होते हैं, जैसे कि, हृदय को हर मिनट में पैंसठ से सत्तर बार धडकने का संकेत सुप्त दिमाग से ही मिलता है। उसी तरह, मनुष्य की सांस लेने की प्रक्रिया, आहार पचन करने की क्रिया, अनचाहे गंदगी को शरीर से बाहर करने की प्रक्रिया, आदि, दिमाग के सुप्त प्रज्ञ से प्राप्त संकेतों की वजह से ही होता है।

अब हम उन विशेषज्ञों के संशोधन ज्ञान पर एक नज़र डाल कर देखते हैं। उनके हिसाब से हम दिमाग का पूरा और सही इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। क्या यह विशेषज्ञों की बातें सही हैं? मेरे कहने का मतलब बस इतना है कि, दिमाग के दोनों हिस्सों पूरी

तरह से हमेशा कार्यरत हैं। अब मेरा सिर्फ यही अनुमान है कि क्या हम सचमुच हमारे दिमाग का सही इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं? और एक बात हम सब जानते हैं कि कभी कार्यक्रम मिसिलों को हाथ नहीं लगाना है। यह बात हम कंप्यूटर सीखते वक्त हमें बताया जाता है तो वही बात सुप्त दिमाग पर भी लागू होता है। क्योंकि वहां मानव मन शरीर

के रोजाना काम-काज से संबंधित सूचनाएँ, संवेदना, संदेश और कार्यक्रमों का संग्रह रहता है। अगर कोई उन कार्यक्रम मिसिलों पर प्रयोग करके कुछ पाना चाहते हैं तो उसके बदले में बहुत कुछ खोना भी पड़ेगा। क्यों कि मैं तो सिर्फ अपनी राय बता रहा हूँ, आखिर कोई वैज्ञानिक तो नहीं हूँ ना।



## परहित सरिस धर्म नहीं भाई

मानव सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण हमारा सबसे बड़ा धर्म है कि हम स्वतः जिये और दूसरों को भी जीने दें। हम जितना ही दूसरों का हित करते हैं, उतना ही दूसरों से सम्मान प्राप्त करते हैं। परोपकारी व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी को अपनाता है, जिससे समाज में उसका यश बढ़ता है।

दूसरे के हित-साधन में सहायक होना ही 'परहित' कहलाता है। निःसंदेह परहित जैसा संसार में कोई दूसरा धर्म नहीं। यही सब धर्मों के मूल प्राण हैं। परोपकार का व्यापक अर्थ है, निःस्वार्थ भाव से दूसरों का उपकार करना। अपने हित की चिन्ता न करते हुए दूसरों की भलाई करना ही सच्चे अर्थ में 'परोपकार' है।

धर्म और परोपकार दोनों एक ही हैं। दोनों में कोई भेद नहीं है। परन्तु यदि हम विशाल रूप से देखें तो परहित या परोपकार में बदले की भावना नहीं होती है। हमारा हित कोई चाहे या न चाहे, हम दूसरे का हित ही चाहेंगे, यही है सच्चे परहित या परोपकार की भावना। यह मानवता की कसौटी है। स्वर्गीय राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्तजी का कथन है:-



**एस मुत्ताज बेगम,**  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

“वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।” सच्चा मानव तो वह है जो अपने सुख-दुःख के साथ दूसरों के सुख-दुःख को भी अपनाता है और अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरों का हित-चिंतन करता है।

व्यक्तिगत जीवन में भी परोपकार का बड़ा महत्व है। इसके बिना मनुष्य के गुणों का विकास संभव नहीं है। परोपकार से मनुष्य का मन निर्मल होता है और दया, क्षमा और दान आदि गुणों से वह पूर्ण हो जाता है। संसार के सभी धर्मों में परहित ही सबसे महान धर्म है। महात्मा तुलसीदासजी का कथन है-“परहित सरिस धर्म नहीं भाई।”



सरदार:- अंदाजा लगा दो कि मेरे जब कितने सिक्के हैं ?  
दोस्त:- अगर मैं सही बताया तो क्या दोगे ?  
सरदार:- मैं दोनों सिक्के तुम्हे दूंगा।

## ग्राम्य भारत – एक नज़र



अक्षता ए. मल्या, ॥ बी ई,  
(श्री के.अनंत मल्या,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर के सुपुत्रि)

किसी कवि ने ठीक कहा है कि – "है अपना हिन्दुस्तान कहाँ, वह बसा है हमारे गाँवों में।" भारत माता ग्रामवासिनी है। भारत की 76प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। इसीलिए भारत को गाँवों का देश कहा जाता है। गाँव ही भारत की आत्मा है, भारतीय जीवन के दर्पण हैं और भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं। जिस प्रकार आत्मा की स्वस्थ स्थिति पर सारे शरीर की उन्नति निर्भर होती है। उसी प्रकार भारत की स्वस्थ स्थिति सारे गाँवों की उन्नति पर निर्भर है। इसीलिए गाँधीजी कहा करते थे कि भारत का हृदय गाँवों में निवास करता है।

एक समय था जब भारत के गाँव सुसंपन्न और समृद्ध थे। यहाँ की धरती सोना उगलती थी और चारों ओर सुख-समृद्धि थी। परन्तु आज गाँवों की वह दशा नहीं है। आज वे अभावग्रस्त हैं, दरिद्रता की साक्षात् प्रतिमा हैं तथा अज्ञान, अशिक्षा, रोग एवं अभावों का घर हैं। आज के गाँवों में जीवन के लिए आवश्यक सुख-सुविधाओं का भी अभाव है जिनके कारण अनेक ग्राम वासी शहरों की ओर पलायन करते हैं। इसलिए शहरों में जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है। गाँवों में स्वास्थ्य सेवाओं का भी नितांत अभाव है। भारतीय वर्षा भी किसानों के जीवन से खिलवाड़ करने में पीछे नहीं रहती। कभी समय से पूर्व वर्षा तो कभी अतिवृष्टि और कभी अनावृष्टि। इसके कारण देश के

अधिकांश भागों में या तो सूखे की स्थिति बनी रहती है या फिर बाढ़ के कारण खड़ी फसलें चौपट हो जाती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने गाँवों की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया तथा किसानों के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए अनेक महत्वपूर्ण उपाय किए। गाँवों में सहकारी समितियाँ तथा बैंक स्थापित की गईं जिससे किसानों को कम दर पर ऋण उपलब्ध हो सके। जमींदारी प्रथा का निर्मूलन कर दिया गया और, खेतों की चक्रबंदी तथा सीमा निर्धारित कर दी गई। गाँवों में नए-नए किस्म के बीज, उपकरण तथा खाद आदि का वितरण करवाने के लिए सामुदायिक विकास योजनाएँ प्रारम्भ की गईं। हर्ष का विषय यह है कि भारत में सरकारी प्रयासों के कारण हरित क्रान्ति हो रही है। अब गाँवों में शिक्षा, चिकित्सा तथा मनोरंजन की सुविधाएँ पूरी तरह से नहीं हुई हैं। इसका प्रमुख कारण है लोगों की असहकारिता और पूरी जानकारी न मिलना। कुछ गाँव के लोग अभी भी अपने प्राचीन पद्धति और संप्रदायों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं और कुछ गाँवों में लोगों को सरकार की नई-नई योजनाओं के बारे में ठीक तरह से जानकारी नहीं मिल रही है।

भारत में ग्राम्य जीवन, जो कालांतर में एक दयनीय स्थिति पर पहुँच गया था, अब पुनः आकर्षक बनता नज़र आ रहा है। गाँवों की दशा सुधारने के लिए केवल सरकारी



उपाय पर्याप्त नहीं है। इसके लिए ग्रामीण युवकों को आगे आना होगा। उन्हें शहरों की ओर पलायन की प्रवृत्ति को त्यागकर गाँवों में ही रहकर गाँवों की अभिवृद्धि में सरकार के साथ हाथ मिलाना चाहिए। भारत की प्रगति गाँवों की अभिवृद्धि से ही होगी। भारत कृषि प्रधान देश है। गाँवों में किसान कृषि

करते हैं। इससे ही हमारा देश आगे बढ़ सकता है। अगर हमारा हृदय कमजोर हुआ तो सारा शरीर अस्वस्थ हो जाएगा, वैसे ही गाँव नाश होगा तो सारा देश संकट में पड़ जाएगा। हमारे देश की प्रगति के लिए हमें गाँवों की अभिवृद्धि करना जरूरी है।



## विश्वकप फुटबॉल के कुछ दिलचस्प तथ्य

1. 19 फीफा विश्व कप टूर्नामेंटों को आठ विभिन्न राष्ट्रीय टीमों ने जीता है।
2. फीफा विश्व कप दुनियाँ का सबसे व्यापक रूप से देखने वाला खेल आयोजन है। एक अनुमान के अनुसार 715,100,000 लोगों ने वर्ष 2006 के फीफा विश्व कप फाइनल मैच देखा था।
3. सबसे अधिक गोल स्कोरिंग के लिए रिकॉर्ड किया हुआ टीम हंगेरी है। वर्ष 1982 में उन्होंने अलसाल्वाडोर को 10-1 से हराया था।
4. टूर्नामेंट में नंगे पैर खेलने की अनुमति न होने के कारण वर्ष 1950 में भारत प्रतियोगिता से बाहर हुआ।
5. विश्व कप फुटबॉल और विश्व कप क्रिकेट दोनों खेलों में केवल एक ही व्यक्ति भाग लिया है – सर विव रिचर्ड्स।
6. वर्ष 1930 के बाद हर विश्व कप टूर्नामेंट में भाग लिया हुआ एकमात्र देश ब्राजील है।
7. वर्ष 2010 में मेजबान देश दक्षिण आफ्रीका पहले बार पहले दौर में ही टूर्नामेंट से बाहर हुआ।
8. ब्राजील को तीन बार विश्व कप जिताने में योगदान देनेवाले पेले को सब से सफल खिलाड़ी माना जाता है।



संग्रह: **विवेकानंद के.एस.**,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, चिक्कमगलूर



9. वर्ष 2002 में तुर्की के हकान सुकुर सिर्फ 11 सेकेंड लेकर विश्व कप में सबसे तेज गोल करने वाले खिलाड़ी बने।



### बुरा व्यक्ति

हमेशा बुराई ढंढने वाला व्यक्ति  
उस मक्खी जैसे होता है  
जो शुद्ध और स्वच्छ जगह  
छोडकर गंदगी में रमती है।

### याद

हर दोस्त से बात करना फितरत है हमारी  
हर दोस्त खुश रहे हसरत हमारी  
कोई हमें याद करें, न करे पर सबको  
याद करना आदत है हमारी।

**मंगल निधि**  
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में प्रयोग किए जानेवाले  
संकेताक्षर व विस्तार तथा लिप्यंतरण

संग्रह: ई प्रकाशन  
लेखाधिकारी, उप क्षेत्रीय कार्यालय, शिवमोग्गा



Abbreviations	English Expansion	हिन्दी लिप्यंतरण
A.E.C.D	Account of Employees' Compulsory Deposit	अकाउंट ऑफ एम्प्लॉईस कम्पल्सरी डिपॉसिट
A.G	Accountant General	अकाउंटेंट जनरल
ABP	Annual Business Plan	ऐन्नुयल बिस्नेस प्लान
ASD	Administrative Service Division	अडिमिनिस्ट्रिटिव सर्विस डिविजन
ATP	Advance Tour Programme	अडवान्स टूर प्रोग्राम
B.E	Budget Estimate	बजट एस्टिमेट
B.W	Basic Wages	बेसिक वेजस
BIFR	Board for Industrial Finance & Reconstruction	बोर्ड फॉर इन्डस्ट्रियल फैनान्स एन्ड रीकन्स्ट्रक्शन
BOT	Board of Trustees	बोर्ड ऑफ ट्रस्टीस
BPR	Business Process Reengineering	बिज़नेस प्रोसेस रीइंजीनियरिंग
C.I	Compound Interest	कंपाउंड इंटररेस्ट
C.P	Certificate of Proceedings	सर्टिफिकेट ऑफ प्रोसीडिंग्स
CAMPS	Computerized Accounting Monthly preparing System	कंप्यूटरीस्ड अकौंटिंग मंथली प्रिपेरिंग सिस्टम
CAP	Central Action Plan	सेन्ट्रल एक्शन प्लान
CAPS	Computerized Accounting Payment System	कंप्यूटरीस्ड अकौंटिंग पेमेंट सिस्टम
CBT	Central Board of Trustees	सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ ट्रस्टीस
CEPS	Computerized Employees' Pension System	कंप्यूटरीस्ड एम्प्लॉईस पेंशन सिस्टम
CINB	Corporate Internet Banking	कोर्पोरेट इन्टरनेट बैंकिंग
CPAS	Computerized Payment Accounting System	कंप्यूटरीस्ड पेमेंट अकौंटिंग सिस्टम
CRAS	Computerized Receipt & Accounting System	कंप्यूटरीस्ड रिसीट अकौंटिंग सिस्टम
CrPC	Criminal Procedure Code	क्रिमिनल प्रोसीजर कोड
CSD	Customer Service Division	कस्टमर सर्विस डिविजन
CTR	Central Treasury Rules	सेन्ट्रल ट्रेजरी रूलस
D.A	Dearness Allowance	डियरनेस अलावेन्सस
D.C	Death Certificate	डेथ सर्टिफिकेट
DCBR	Demand Collection Balance Register	डिमांड कलेक्शन बैलेन्स रिजिस्टर
DRF	Death Relief Fund	डेथ रिलीफ फंड
E.C	Executive Committee	एग्ज़िक्यूटिव कमिटी
EDLI	Employees' Deposit Linked Insurance Scheme	एम्प्लॉईस डिपॉसिट लिंक्ड इन्शुरेन्स स्कीम
EDP	Electronic Data Processing	इलेक्ट्रॉनिक डेटा प्रोसेसिंग
Ee	Employee	एम्प्लॉई
EPIGM	Employees' Provident Fund Internal Grievance Monitoring	एम्प्लॉईस प्राविडेंट फंड इन्टर्नल ग्रीवेन्स मॉनिटरिंग
Er	Employer	एम्प्लॉयर
ESI Act	Employees' State Insurance Act	एम्प्लॉईस स्टेट इन्शुरेन्स एक्ट
FA & CAO	Financial Advisor & Chief Accounts Officer	फैनान्शियल एडवैजर व चीफ अकौन्ट्स ऑफिसर
FPF	Family Pension Fund	फैमिलि पेंशन फंड
GFR	General Financial Rules	जनरल फैनान्शियल रूलस
GSLI	Group Savings Life Insurance	ग्रुप सेविंग्स लैफ इन्शुरेन्स
IAW	Internal Audit Wing	इन्टर्नल ऑडिट विंग
IBB	Interest Bearing Balance	इन्ट्रेस्ट बेरिंग बैलेन्स
IDFC	Infra Structure Development Finance	इन्फ्रा स्ट्रक्चर डेवलपमेंट फैनान्स
IFSC	Indian Financial System Code	इन्डियन फाइनेन्शियल सिस्टम कोड
IPC	Indian Penal Code	इन्डियन पीनल कोड
IPPS	Insurance Premium Payment System	इन्शुरेन्स प्रीमियम पेमेंट सिस्टम
IWSU	Internal Work Study Unit	इन्टर्नल वर्क स्टडी यूनिट
L.C	Ledger Card/Legal Cell	लेजर कार्ड/लीगल सेल
LIP	Life Insurance Premium	लैफ इन्शुरेन्स प्रीमियम

## मंगल निधि

LISD	Labour Information System Division	लेबर इन्फर्मेशन सिस्टम डिविजन
MAP	Manual of Accounting Procedure	मैनुवल् ऑफ़ एकाउंटिंग प्रोसीजर
MIS	Management Information System	मैनेजमेंट इन्फर्मेशन सिस्टम
NCP	Non Contributory Period	नॉन कान्ट्रिब्यूटरी पीरियड
NCS	Non Contributory Service	नॉन कान्ट्रिब्यूटरी सर्विस
NIC	National Informatics Centre	नैशनल इन्फॉर्मेटिक्स सेंटर
NSC	National Saving Certificate	नैशनल सेविंग सर्टिफिकेट
NSSN	National Social Security Number	नैशनल सोशियल सेक्युरिटी नम्बर
O & M	Organisation & Method	आगर्नैजेशन व मेथड
P.A	Past Accumulation	पास्ट एक्युमुलेशन
PGHS	Public Grievance Handling System	पब्लिक ग्रीवैन्स हैंडलिंग सिस्टम
POTD	Post Office Time Deposit	पोस्ट ऑफिस टाइम डिपोजिट
PPO	Pension Payment Order	पेंशन पेमेंट आर्डर
PRO	Public Relation Officer	पब्लिक रिलेशन ऑफिसर
R & P	Receipt & Payment Account	रिसीट व पेमेंट अकाउंट
R.E	Revised Estimate	रिविज़्ड एस्टिमेट
RFA	Reserve & Forfeiture Account	रिजर्व व फॉफ़ेचर अकाउंट
S.C	Scheme Certificate	स्कीम सर्टिफिकेट
S.I	Simple Interest	सिम्पल इन्टरेस्ट
SDS	Special Deposit Scheme	स्पेशल डिपोजिट स्कीम
SFC	Surviving Family Certificate	सर्वैविंग फैमिली सर्टिफिकेट
SICA	Sick Industries (Special Provisions) Compaines Act	सिक इन्डस्ट्रीस (स्पेशल प्रोविज़न्स) कम्पनीस एक्ट
SRF	Special Reserve Fund	स्पेशल रिजर्व फंड
SSB	Security Service Branch	सेक्युरिटी सर्विस ब्रांच
TD/TP	Tour Dairy	टूर डैरी
TRRN	Temporary Return Referemce Number	टैम्पोरी रिटर्न रेफरेन्स नंबर
UCD	Unclaimed Deposit Account	अनक्लेम्ड डिपोजिट अकाउंट
VDR	Valuable Document Register	वैल्युएबल डाक्युमेंट रिजिस्टर

## सुविचार

- 1) एक आदर्श माँ गुरु से भी श्रेष्ठ है। – श्री अरविन्द
- 2) शक्ति ही जीवन है। दुर्बलता ही मरण है। – स्वामी विवेकानन्द
- 3) सज्जनों का संग शाम के साए की तरह वृद्धि होती है। दुर्जनों का संग दोपहर के साए की तरह क्षीण होती है। – वशिष्ठ
- 4) क्रोध को सहनशीलता से तथा बुराई को अच्छाई से जीतना है। – गौतम बुद्ध
- 5) जरूरतमंद की मदद या सेवा करना भगवान की सर्व श्रेष्ठ पूजा है। – महात्मा गांधी
- 6) गलती को मान लेने की हिम्मत तथा उसे सुधारने की ताकत ही उन्नति का मार्ग है। – लेनिन
- 7) समय का सद्विनियोग ही सफलता का रहस्य है। – उमर भैयद
- 8) जिसने असफलता का अनुभव कभी नहीं किया हो, वो सफलता को भी कभी नहीं पा सकेगा। – लिंकन
- 9) विवेकशील व्यक्ति वह होता है जो किए हुए सभी कार्य किसी को बताता नहीं। जिसे वह बता नहीं सकता उसे करता नहीं। – कम्प्यूशियस
- 10) सभी शिक्षित ज्ञानी नहीं होते। सभी ज्ञानी शिक्षित नहीं होते। – श्री अरविन्द  
(संग्रह) – लता एन.शेठ,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक, क्षेत्र का, मंगलूर



- शरतचन्द्र गट्टी,  
वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

## कम्प्यूटर

मानव भगवान की एक अद्भुत सृष्टि है। लेकिन मानव के उस दिमाग को दाद देनी होगी जिसने कम्प्यूटर जैसे उपकरण का आविष्कार किया। आश्चर्य की बात तो यह है कि बस बटन दबाओ, काम हो गया। आज लग-भग हर क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है जैसे कि बैंक, रेलवे, हवाई सेवा, शेयर बाज़ार, जाक इत्यादि। आज शादियाँ भी कम्प्यूटर से हो रही हैं। एक दिन अगर कम्प्यूटर, इन्टरनेट सेवा बाधित हो जाए तो सारा काम ठप्प हो जाता है।

भारत में कम्प्यूटर की शुरुआत सन 1955-1970 के बीच में हुई। सन 1963 में सरकार द्वारा नियोजित बाबा कमिटी ने कम्प्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक्स की कारगर अभिवृद्धि कार्य के बारे में सोचा। इसलिए उन्होंने सरकार में इलेक्ट्रॉनिक विभाग की स्थापना की। उसके बाद सन 1971 में सरकार ने ई सी आइ एल कम्पनी को भारत में कम्प्यूटर की अभिवृद्धि के लिए आर्थिक सहायता दी।

सरकारी कार्यालयों के काम बहुत ही जटिल होते हैं। हजारों विषयों की जानकारी रखनी पड़ती है। पहले इन सबको पेपर में लिखकर फाइल में रखा जाता था। जिनकी

नष्ट होने की संभावना ज्यादा थी। कभी - कभी ऐसी फाइलों की चोरी या गुम होने की संभावना भी थी। इन सबसे बचने के लिये सरकार ने अब सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर का इस्तेमाल करना प्रारंभ किया।

सरकार कम्प्यूटर के आधार पर विषय संग्रह करके, उसे कम्प्यूटर में सुरक्षित रखती है। उसके बाद वह उस विषय के आधार पर निर्णय लेती है। ऐसे कार्य से किसी मानव निर्मित गलती तथा समय की बचत भी होती है। यह विधान बहुत सरल भी है। सरकारी कार्यालय जहाँ कम्प्यूटर का प्रयोग हो रहा है, वहाँ ई-मेल का भी उपयोग हो रहा है। यह ई-मेल उन्हें कार्यालय के अंदर तथा बाहर के कर्मिकों को संदेश भेजने में सहायता करती है। इस पद्धति से समय को बचाने में भी बहुत सहायता मिलती है।

कम्प्यूटर द्वारा कार्यालय में काम करने वाले कर्मिकों को वेतन देने में भी सहायता मिलती है। उसके साथ मेडिकेयर, मेडिएयड और अन्य हिसाब-किताब करने में भी यह बहुत सहायक है। उदाहरण के लिये आंतरिक राजस्व सेवा, लोगों को चैक वापसी भी कम्प्यूटर द्वारा ही होता है।

आधुनिक सरकार में कम्प्यूटर एक महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जनसंख्या गिनती और उसकी जानकारी संग्रह करने में भी

## मंगल निधि

इस का भरपूर योगदान है। सरकार कर और अन्य वित्तीय आंकड़े की जानकारी भी कम्प्यूटर में ही संग्रह करती है। किसी विषय के चार्ट या विवरण की जानकारी देने के लिए भी अब कम्प्यूटर का ही उपयोग किया जाता है, अन्य पद्धति की तुलना में इस से समय की बहुत बचत हो रही है।

पुलिस, जासूसी और सेना विभागों में भी कम्प्यूटर का बहुत उपयोग हो रहा है। पुलिस गाड़ी तथा एफ बी आइ जैसे जासूसी एजेंसियाँ अब लैपटॉप कम्प्यूटरों का उपयोग करने लगे हैं, जिससे उन्हें अपराधियों के बारे में तत्काल जानकारी मिलती है। आजकल पुलिस गाड़ी की कम्प्यूटरों में भी ऐसी व्यवस्था है जिससे उन्हें गाड़ी के पंजीकरण की जानकारी भी मिल सकती है। आज

सेना विमान में भी कम्प्यूटर का उपयोग किया जाता है, जिससे उन्हें शत्रु सेना के स्थान का पता लगाया जा सकता है। आजकल ऐसे कुछ कम्प्यूटर तंत्रज्ञान का आविष्कार हुआ है, जो सेना विभाग में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

सरकार सिर्फ कम्प्यूटर तंत्रज्ञान का इस्तेमाल ही नहीं बल्कि उसकी अभिवृद्धि के लिए भी कई योजनाओं को जारी की हैं। जैसे कि यु एस सरकार ने वल्ड वैड वेब की अभिवृद्धि में एक महत्वपूर्ण पात्र निभाया है। एक अंतरराष्ट्रीय सरकार के लिए भी कम्प्यूटर का योगदान महत्वपूर्ण है। इस से कार्मिकों का समय तथा काम की बचत भी संभव है।



## मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

भाषा की सुंदर रचना हेतु मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग आवश्यक माना जाता है। ये दोनों भाषा को सजीव, प्रवाहपूर्ण एवं आकर्षक बनाने में सहायक होते हैं।

कुछ प्रसिद्ध मुहावरे और उनके अर्थ वाक्य में प्रयोग सहित दिए जा रहे हैं:-

1. अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना (स्वयं अपनी प्रशंसा करना) – अच्छे आदमियों को अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना शोभा नहीं देता।

2. अक्ल का चरने जाना (समझ का अभाव होना) – इतना भी समझ नहीं सके, क्या अक्ल चरने गई है?



3. अपने पैरों पर खड़ा होना (स्वावलंबी होना) – युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने पर ही विवाह करना चाहिए।

4. अक्ल का दुश्मन (मूर्ख) – आजकल तुम अक्ल के दुश्मन हो गए हो।

5. अपना उल्लू सीधा करना (मतलब निकालना) – आजकल के नेता अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही लोगों को भड़काते हैं।



# निर्मल गंगा अभियान



- सरिता के.श्रेणै,

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर

भारत में सबसे पवित्र माने जानेवाली नदियों में से एक है "गंगा नदी"। अनादिकाल से ही गंगा मैय्या जीवदायिनी और मोक्षदायिनी रही है और ये भारतीय संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता का प्रतीक है।

भारत की सबसे बड़ी नदी गंगा करीब 2525 कि.मि की दूरी तय कर गोमुख से गंगासागर तक अनेक राज्यों में बहती है।

ऐसी पवित्र नदी आज मानव की अभिलाषाओं के कारण प्रदूषित है। गंगा में नहाने से जन्म पावन होता है, अपना पाप नष्ट हो जाता है और हम परिशुद्ध हो जाते हैं, ऐसे विचार धाराओं से हम सब हमारी अशुद्धि नदी में विसर्जित करने लगे हैं।

गंगा के प्रदूषण के कारण भविष्य में 40 करोड़ जनता जो गंगा के पानी पर अवलंबित है, उनका जीवन अस्थिर हो जाएगा। बढ़ते प्रदूषण के कारण कई तरह की बीमारियाँ भी फैलेगी।

गंगा तट के शहरों के पास के गाँव के लोग नदी के पानी पर ही निर्भर हैं, पर वहाँ कई तरह की बीमारियाँ पाई गई हैं। गंगा के प्रदूषण के साथ-साथ धरती के भीतर पानी का प्रदूषित होना ही इसका कारण है।

19 वीं सदी में लंदन के लोगों ने थेम्स नदी के प्रदूषण के कारण कई समस्याओं का सामना किया था, तथा उसे स्वच्छ करने के बाद यह ठान लिया था कि उसे और

प्रदूषित होने नहीं देंगे। ऐसा ही कुछ स्वयं प्रेरित निर्णय लेने से हम गंगा को भी प्रदूषित होने से बचा सकते हैं।

इस दिशा में ऋषिकेश में जनता ने श्रमदान करके गंगा नदी और तटीय इलाके का निर्मलीकरण किया था। इस दिशा में गंगा तट की जनता को और भी जागृत करना है।

गंगा नदी में होनेवाला प्रदूषण पिछले कई सालों से भारत सरकार और जनता के लिए चिन्ता का विषय बना हुआ है।

ऋषिकेश से लेकर कोलकाता तक गंगा किनारे परमाणु बिजलीघर, रासायनिक खाद के कारखाने हैं, जो विशुद्ध रासायनिक वस्तुओं की गंदगी नदी में फैलाने के साथ साथ बीमारियों को भी बढ़ावा देती हैं। कानपुर में चमड़े का उद्योग प्रसिद्ध है, वहाँ से बहुत ज्यादा विषयुक्त धातु नदी में छोड़ा जाता है। गंगा किनारे में अनेक चीनी तथा अन्य विविध कारखाने बसे हैं, इन सबसे नदी में गंदगी फैली हुई है।

नदी में प्लास्टिक बहाना, श्रद्धा और आस्था के नाम से इन्सानों तथा जानवरों के शव बहाना भी प्रदूषण के लिए कारण है। इन सब पर प्रतिबंध लगाना जरूरी है।

गंगा नदी के बचाव हेतु भारत सरकार ने 1985 में ही "गंगा एक्शन प्लान" बनाया था। इससे भी गंगा को स्वच्छ करने का काम सफल नहीं हो सका। इसकी कमी यह थी कि इसमें गंगा के बहाव को बढ़ाने पर ध्यान नहीं दिया गया था। इस प्लान के लिए सरकार

## मंगल निधि

द्वारा 2600 करोड़ रुपये मंजूर किए जाने पर भी इसका इस्तेमाल सुचारु रूप से नहीं हो पाया है।

झरने और ग्लेशियर से आनेवाले पानी कानपुर से पहले ही नहरों से निकाल दिया जाता है। पहाड़ों से बहते हुए पानी में मिट्टी की वजह से गंगा के बहाव में कमी आती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि गंगा को बचाने के लिए हिमालय के ग्लेशियर को बचाना होगा।

स्वच्छ गंगा अभियान – निश्चित तौर पर यह एक मुश्किल काम है, क्योंकि गंगा नदी को बहुत ही पवित्र माना जाता है। इसके पानी को कई दिनों तक रखने पर भी कीड़े नहीं आते। निर्मल गंगा अभियान में कई सरकारी तथा गैर सरकारी संगठन एक जुट होकर काम कर रहे हैं। गायत्री परिवार संगठन का प्रकल्प है, “निर्मल गंगा अभियान” एक गैर सरकारी संगठन ने इस दिशा में एक वेबसाइट खोला है, जिसका नाम है – “क्लीन गंगा डाट काम”। सरकार ने बजट वर्ष में स्वच्छ गंगा अभियान के लिए 2200 करोड़ रुपयों की घोषण की है।

स्वच्छ गंगा अभियान बिजली पर निर्भर

नहीं है। इसमें कूड़े करकट को गुरुत्वाकर्षण के सहारे एक बड़े कुंड में जमा कर लिया जाता है, जहाँ जैविक तरीके से इसकी सफाई होती है। कूड़े में से कीटनाशक, लोहा-लकड़ और अन्य प्रदूषण को हटा दिया जाता है। अमेरिका में नदियों की सफाई इसी तरीके से होती है।

सरकार ने हाल ही में गंगा तट के 58 कारखानों पर प्रतिबंध लगाया है, क्योंकि इन कारखानों ने विषयुक्त त्याज फिल्टर किए बिना गंगा में छोड़ रहे थे।

सबसे बड़ी आवश्यकता है कि “आस्था और विचारों को बदलने की।” माँ को प्रदूषित कर पुण्य कमाने की मानसिकता को हमें बदलना होगा।

सारा कचरा माँ के पेट में डालकर पुण्य कमाने के भ्रम को मिटाना होगा। जनमानस बदले बिना देश की नदियों का शुद्धीकरण संभव नहीं है।

गंगा हमारी माँ है, और हमारी संस्कृति और सभ्यता की अविरल धारा है।

“माँ गंगा करे रो-रो कर पुकार

कहाँ गए मेरे तारणहार”



## हाय रे पैसा।

पैसे से पुस्तक मिलेगा..... बुद्धि नहीं ।  
पैसे से मंदिर मिलेगा..... देवता नहीं ।  
पैसे से बिछावन मिलेगा..... नींद नहीं ।  
पैसे से घर मिलेगा..... परिवार नहीं ।  
पैसे से मनोरंजन मिलेगा..... खुशी नहीं ।  
पैसे से दिखावटी सुख मिलेगा..... मन की शांति नहीं ।  
फिर ऐसा पैसे से क्या फायदा.....॥ हाय रे पैसा ॥

## दिल और आँख

दिल ने कहा आँख से – देखा करो कम,  
क्योंकि देखती हो तुम और तडपते है हम।  
उस पर आँख ने कहा –  
दिल सोचा करो कम, क्योंकि सोचते हो  
तुम और रोती हैं हम।

– (संग्रह) आर महेशबाबू  
प्रवर्तन अधिकारी, मडिकेरि

# दार्जिलिंग (एक हिल स्टेशन)



**सुभाष कुमार सामन्तो**  
हिन्दी अनुवादक  
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर।

पिछले माह घर जाने के दौरान 2 दिनों के लिए कहीं भ्रमण करने का मन किया। दोस्तों के साथ किसी हिल स्टेशन जाना तय हुआ। और जो हिल स्टेशन चुना गया



वह था.... "दार्जिलिंग"।

कंचनगंगा पर्वत की गोद में बसा दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) भारत के सबसे खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है। यहाँ की चाय वर्तमान में विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ आने के बाद पहली बार चाय के बागान देखना नसीब हुआ। अगर कभी मौका मिले तो यहाँ की खूबसूरती जरूर देखने जाएँ। यहाँ की एक ट्रेन जिसे टॉय ट्रेन के नाम से भी जाना जाता है, खास आकर्षणों में से एक है। यह ट्रेन सिलिगुडी से दार्जिलिंग के बीच की दूरी बादियों की खूबसूरती के बीच 5 घंटों में तय करती है। चारों ओर फैले चाय के बागान मन मोह लेते हैं। यह यात्रा अवश्य ही आपकी मौज मस्ती को दुगुना कर सकती है। यहाँ प्रस्तुत है कुछ खास जानकारी जो आपको भ्रमण के दौरान सहायता कर सकती है।

दार्जिलिंग के दर्शनीय स्थल....

1. टाईगर हिल्स - शहर से 11 कि. मी की दूरी पर यह वह स्थान है जहाँ से कंचनगंगा पर्वत की चोटी से सूर्योदय देखने का मजा

कुछ और ही है ।

2. सेंचल लेक - 8160 फुट की उंचाई पर यह एक खूबसूरत झील है ।

3. मानभक्ता - विश्व की तीसरी सबसे ऊंची चोटी कंचनजंघा को यहां से देखा जा सकता है।

4. चिड़िया घर - इस चिड़िया घर का खास आकर्षण है साइबेरियाई बाघ ।

5. बोटेनिकल गार्डन - हिमालय क्षेत्र के पेड़, पौधे तथा जडीबूटी यहां देखी जा सकती है।

6. सिंगला गार्डन एवं मिरिक पिकनिक स्पॉट - पिकनिक हेतु सर्वोत्तम स्थान है।

7. जल्दापारा अभयारण्य - यह गेंडों के लिए प्रसिद्ध है।

8. हैप्पी वैली एस्टेट - यहाँ चाय प्रोसेसिंग उद्योग को विस्तृत रूप से देखा जा सकता है।

बागडोगरा यहाँ का नजदीकी हवाई अड्डा है जो दिल्ली, कोलकाता एवं गुवाहाटी से जुड़ा हुआ है । प्रायः सभी एयरलाइन्सें यहाँ के लिए उड़ान सेवा मुहय्या कराती है।

रेल मार्ग के लिए न्यूजलपाईगुडी यहाँ का निकटतम स्टेशन है। यहाँ सभी ट्रेनों का ठहराव है।

सड़क मार्ग की दृष्टि से सिलीगुडी निकटतम स्थान है। यहाँ से टैक्सी, बस, जीप आदि से दार्जिलिंग आसानी से पहुँचा जा सकता है। दार्जिलिंग के लिए पश्चिम

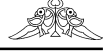


बंगाल पर्यटन विभाग सस्ते दर पर टूर पैकेज भी मुहैया करता है।

यहाँ भ्रमण का उपयुक्त समय मई से जून तथा सितम्बर से नवंबर के मध्य सही माना जाता है। जुलाई तथा अगस्त माह में

बारिश होती रहती है। हल्के ऊनी कपड़े यहाँ के लिए सुविधाजनक है।

ज्यादा जानकारी के लिये पश्चिम बंगाल पर्यटन विभाग की वेबसाईट पर देखा जा सकता है।



## चिकित्सा क्षेत्र



**के.अनंत मल्या**

वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

देश की लगातार बढ़ती हुई आबादी के मद्देनजर इस बात की तरफ भी ध्यान देना है कि, जनसंख्या के आंकड़े में जो बदलाव आया है, इसका एक कारण है चिकित्सा क्षेत्र। लोगों की मृत्यु-दर के नियंत्रण में चिकित्सा विज्ञान और चिकित्सा से संबंधित सहूलियतों में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। दशकों पूर्व होनेवाली मृत्यु-दर को देखें तो नवजात शिशुओं से लेकर बड़े-बूढ़ों तक मामूली सी बीमारियों के कारण जान से हाथ धोना पड़ता था। उस समय के सरकारी आंकड़ों पर यदि नजर डाली जाएँ तो साफ हो जाता है कि अधिकांश बच्चों की मृत्यु तो माँ की गर्भावस्था में हो जाया करती थी। मेरा मानना यह है कि इसका एक मात्र कारण बेहतर चिकित्सा का अभाव और उसके साथ-साथ लोगों की रूढ़िवादी विचारधाराएँ थीं। जब किसी रोग से रोगी की मृत्यु हो जाती थी मरीज़ का ठीक होना या न होना भगवान के भरोसे छोड़ दिया जाता था।

लेकिन जैसे जैसे चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में दवाओं की खोज हुई शहर से लेकर दूर के गाँवों तक लोगों के मन में रोग का भय कम होने लगा। आज बीमारियों का इलाज देश के किसी भी कोने में यदि संभव हो सका है तो इसका एक मात्र कारण

चिकित्सा-सुविधाओं की आसान उपलब्धता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति के स्वस्थ होने में सहायक सामाजिक आर्थिक परिस्थितियाँ भी उतनी ही आवश्यक है। बीमारी के समय मरीजों को उपलब्ध कराई जानेवाली चिकित्सा सुविधाएं और उनकी कीमतें भी स्वस्थ समाज के निर्माण में अहम् भूमिका निभाती हैं। आर्थिक रूप से संपन्न समाजों में न केवल चिकित्सा पर ज़ोर दिया जाता है, बल्कि बीमारियों से बचने के लिए अपनाए जानेवाले रक्षात्मक उपायों पर भी लोगों का विशेष ध्यान रहता है। हमारे भारत देश में भी सरकार ने कई विज्ञापनों के ज़रिए लोगों तक यह संदेश भेजने का काम किया है कि मच्छरों से बचने की सलाह, कैन्सर से बचने के लिए तंबाकू के पैक के ऊपर तंबाकू की हानि की जानकारी भी दी है।

इसलिए मेरा मानना यह है कि केवल सरकार और चिकित्सा क्षेत्र ही नहीं बल्कि हमें भी अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ हमें अपने आस-पास की जगहों की स्वच्छता पर भी सजग रहना चाहिए।



**कार्यालय पर एक नज़र  
राजभाषा संबंधी रिपोर्टों के बारे में  
तिमाही रिपोर्टों का प्रेषण**

कार्यालय का नाम	30.06.2013 को समाप्त तिमाही	30.09.2013 को समाप्त तिमाही	31.12.2013 को समाप्त तिमाही	31.03.2014 को समाप्त तिमाही
क्षे.का.मंगलूर	15.07.2013	18.10.2013	15.01.2014	10.04.2014
उ.क्षे.का.चिक्कमगलूर	10.07.2013	23.10.2013	24.01.2014	10.04.2014
उ.क्षे.का.मैसूर	09.07.2013	21.10.2013	09.01.2014	07.04.2014
उ.क्षे.का शिवमोग्गा	09.07.2013	06.11.2013	10.01.2014	30.04.2014
उ.क्षे.का उडुपि	10.07.2014	10.10.2014	09.01.2014	10.04.2014

**अर्ध वार्षिक रिपोर्ट व वार्षिक रिपोर्टों का प्रेषण**

कार्यालय का नाम	अर्ध वार्षिक रिपोर्ट		वार्षिक रिपोर्ट
	30.09.2013 माप्त छःमाही के लिए	31.03.2014 को समाप्त छःमाही के लिए	31.03.2014 को समाप्त अवधि के लिए
क्षे.का.मंगलूर	18.10.2013	16.04.2014	10.04.2014
उ.क्षे.का.चिक्कमगलूर	22.10.2013	10.04.2014	10.04.2014
उ.क्षे.का.मैसूर	07.11.2013	15.04.2014	07.04.2014
उ.क्षे.का शिवमोग्गा	09.10.2013	30.04.2014	30.04.2014
उ.क्षे.का उडुपि	10.10.2014	11.04.2014	10.04.2014

**वर्ष 2013-14 में संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन समिति की  
बैठकों से संबंधित सूचना**

कार्यालय का नाम	30.06.2013 को समाप्त तिमाही		30.09.2013 को समाप्त तिमाही		31.12.2013 को समाप्त तिमाही		31.03.2014 को समाप्त तिमाही	
	बैठक की तिथि	कार्यवृत्त भेजने की तिथि	बैठक की तिथि	कार्यवृत्त भेजने की तिथि	बैठक की तिथि	कार्यवृत्त भेजने की तिथि	बैठक की तिथि	भेजने की तिथि
क्षे.का.मंगलूर	15.07.2013	02.08.2013	21.10.2013	24.10.2013	16.01.2014	27.01.2014	21.04.2014	30.04.2014
उ.क्षे.का.चिक्कमगलूर	23.07.2013	13.08.2013	01.10.2013	04.10.2013	12.03.2014	12.03.2014	11.06.2014	11.06.2014
उ.क्षे.का.मैसूर	26.07.2013	26.07.2013	12.11.2013	19.11.2013	23.01.2014	23.01.2014	10.04.2014	15.04.2014
उ.क्षे.का शिवमोग्गा	02.08.2013	12.08.2013	01.10.2013	02.10.2013	26.03.2014	26.03.2014	27.06.2014	01.07.2014
उ.क्षे.का उडुपि	16.07.2013	08.08.2013	27.09.2013	07.10.2013	13.01.2014	18.01.2014	10.04.2014	11.04.2014

## हिन्दी पखवाड़ा 2013 की रिपोर्ट

### क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती		विचार प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती		हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	
1. डी.एम.चन्द्रशेखर	₹ 1,200/	1. ई.प्रकाशन	₹ 1,200/	1. यु पांडुरंग किणी	₹ 1,200/
2. ई.प्रकाशन	₹ 1100/	2. यु पांडुरंग किणी	₹ 1100/	2. डी.एम.चन्द्रशेखर	₹ 1100/
3. त्रिवेणी आर उळ्ळाल	₹ 1000/	3. डी.एम.चन्द्रशेखर	₹ 500/	1. लता एन शेट	₹ 500/
				<b>सात्वना पुरस्कार</b>	
				विजयलक्ष्मी पै	₹ 100/
				आशा एस. नायक	₹ 100/
अन्तर अनुभागीय शील्ड प्रतियोगिता (वर्ष 2013)- अनुभाग-10 ₹ 1200/- व शील्ड					
<b>ब का प के लिए हिन्दी श्रुत लेखन एवं हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता में पुरस्कृत कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती</b>					
1. अनिल कुमार		₹ 1,200/-			
2. शशिप्रभा		₹ 1100/-			
3. आनंद गौडा		₹ 1000/-			

दिनांक 28.09.2013, अपराह्न 3.30 बजे श्रीमती कविता एन. जोर्ज, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-1 की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़ा मुख्य समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति तथा हिन्दी पखवाड़ा से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा प्रतियोगिता में पुरस्कार के लिए पात्र अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

### उप क्षेत्रीय कार्यालय, शिवमोग्गा

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती		विचार प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती		हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	
1. नित्यानंद वि कुडालकर	₹ 1,200/	1. नित्यानंद वि. कुडालकर	₹ 1,200/-	1. मोहमद गौस	₹ 1200/
2. गिरि शंकर और दयानंद बडेयर	₹ 1100/	2. मोहमद गौस	₹ 1100/-	2. दयानंद बडेयर	₹ 1100/
3. के एस भास्कर	₹ 1000/	3. गिरि शंकर	₹ 1000/-	3. के एस भास्कर	₹ 1000/

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	विचार प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती
1. वीणा सी शेखर ₹ 1200/- 2. डी आर.पद्मिनी ₹ 1100/- 3. वीणा के. सी ₹ 1000/-	1. वीणा सी शेखर ₹ 1200/- 2. वी शांता ₹ 550/- 3. एस.आर कुमुदिनी ₹ 550/- 4. के.पी प्रकाश ₹ 1000/-	1. वीणा सी शेखर ₹ 1200/- 2. वी शांता ₹ 1100/- 3. आर दयानंद ₹ 500/- 4. सीमा सी.नेत्राकर ₹ 500/-
हिन्दी श्रुत लेखन प्रतियोगिता	हिन्दी श्रुत लेखन प्रतियोगिता (दफ्तरी/एम टी ए)	हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता
सीमा नेत्राकर ₹ 700/- एन गुरुप्रसाद ₹ 300/- टी.पी सौभाग्या ₹ 300/- विद्या शिवप्रकाश ₹ 250/- आर.ललिता ₹ 250/-	बलराम राव ₹ 700/- के.एम रमेश ₹ 600/- बलराम राव ₹ 500/-	एस.आर कुमुदिनी ₹ 500/- विजयलक्ष्मी ₹ 600/- सुमा कश्यप ₹ 500/-
हिन्दी तत्काल भाषण प्रतियोगिता	रंगोली प्रतियोगिता	सामान्य ज्ञान क्विज(लिखित) प्रतियोगिता
एस आर कुमुदिनी ₹ 700/- आर दयानंद ₹ 200/- के.राजेश ₹ 200/- के.पी प्रकाश ₹ 200/- वी.शांता ₹ 500/-	जी.आर सुमित्रा ₹ 700/- आर.ललिता ₹ 300/- एस आर कुमुदिनी ₹ 300/- वीणा के.सी ₹ 500/-	टी.बालराज ₹ 700/- सीमा सी.नेत्राकर ₹ 600/- आर दयानंद ₹ 500/-
<b>हिन्दी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता</b>		
1. एस आर कुमुदिनी विजयलक्ष्मी पी.एस नवीन ₹ 700/-	2. मंजुनाथ राव.टी सुमा कश्यप आर ललिता ₹ 600/-	3. एम.आर बालकृष्णा टी.बालराज के.राजेश ₹ 500/-
<p><b>अन्तर अनुभागीय शील्ड प्रतियोगिता</b> संयुक्त विजेता-प्रशासन अनुभाग एवं प्रवर्तन अनुभाग (₹ 1200/- का नकद पुरस्कार प्रत्येक अनुभाग को एवं एक शील्ड) हिन्दी पखवाड़े के मुख्य समापन समारोह का आयोजन दिनांक 27-09-2013 को उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर में श्री नवीन कुमार कनौजिया,</p>		<p>क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-॥ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। समारोह में श्रीमती भार्गवी जी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह के दौरान हिन्दी पखवाड़े में संपन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह के दौरान पूरे उत्सव का माहौल कायम रहा।</p>

मंगल निधि

उप क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	विचार प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती
1. हरीश कुमार ₹ 1200/- 2. रेखा नाइक ₹ 1100/- 3. निर्मला.एच ₹ 1000/-	1. रेखा नाइक ₹ 1200/- 2. श्रीधर भंडारी ₹ 1100/- 3. मंजु मोगोरा ₹ 1000/-	1. रेखा नाइक ₹ 1200/- 2. अमिता बी ₹ 1100/- 3. निर्मला.एच ₹ 500/- अनंत नाइक ₹ 500/-
अन्तर अनुभागीय शील्ड प्रतियोगिता (वर्ष 2013) - प्रवर्तन अनुभाग		

दिनांक 30-09-2013 के अपराह्न 3.30 बजे, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त/प्रभारी अधिकारी श्री प्रसन्न नी.मुळे की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाडा मुख्य समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति तथा हिन्दी पखवाडा से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा प्रतियोगिता में पुरस्कार पात्र अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

उप क्षेत्रीय कार्यालय चिक्कमगलूर

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	विचार प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती
1. नागरत्ना बी.एन ₹ 1,200/- 2. विवेकानंद के.एस ₹ 1,100/- 3. अक्षता ₹ 1000/-	1. शर्मिला एम.ए ₹ 1,200/- 2. नागरत्ना बी.एन ₹ 550/- 3. अक्षता ₹ 550/- 4. विवेकानंद के.एस ₹ 500/- 5. चिदानन्द.एस ₹ 500/-	1. नागरत्ना बी.एन ₹ 1,200/- 2. शर्मिला एम.ए ₹ 1100/- 3. अक्षता ₹ 1000/-
		<b>सांत्वना पुरस्कार</b>
		1. ज्योतिलक्ष्मी.एम ₹ 100/- 2. संपत ₹ 100/- 3. जयश्री ₹ 100/-
हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारियों के नाम व प्रदान की गई राशि श्री/श्रीमती	
1. नागरत्ना बी.एन ₹ 500/- 2. शर्मिला एम.ए ₹ 400/- 3. संपत ₹ 300/-	1. जयश्री ₹ 500/- 2. शेख शब्बीर अहमद ₹ 500/- 3. नागरत्ना बी.एन ₹ 500/- 4. चिदानन्द.एस ₹ 500/- 5. नागेश ₹ 500/-	

## मंगलूर क्षेत्र के हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट

कार्यालय का नाम	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या
1	2	3
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर	01.05.13 से 03.05.13 तक 23.09.13 से 25.09.13 तक 15.12.2013 व 16.12.2013 10.01.2014	12 कर्मचारी 10 कर्मचारी 10 कर्मचारी 09 अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर	24.07.13 से 26.07.13 तक 29.10.2013 से 31.10.2013 तक 18.02.2014 से 19.02.2014 तक	12 कर्मचारी 10 कर्मचारी 10 कर्मचारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, चिक्कमंगलूर	13.03.2014 व 14.03.2014 तक	10 कर्मचारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि	21.05.2013 से 23.05.2013 तक 11.11.2013 से 13.11.2013 तक 19.03.2014 व 20.03.2014 तक	10 कर्मचारी 10 कर्मचारी 10 कर्मचारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, शिवमोगगा	27.3.2014 व 28.03.2014	13 कर्मचारी

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की विभागीय (हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन) नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2013-14 के दौरान नकद पुरस्कार प्राप्त कर्मचारी गण:-  
क्षेत्रीय कार्यालय मंगलूर

क्रमांक	नाम (श्रीमती/श्री)	पद नाम
1	गीता.बी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
2	सुरेश एम	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
3	ई.प्रकाशन	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
4	नूर अहमद	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
5	जी.एन मुरलीधर	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
6	विमला.के	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
7	प्रपुल्ला	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
8	आशा एस.नायक	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
9	बी.जयलक्ष्मी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
10	चंद्रायिणी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
11	यू.पांडुरंग किणी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक

## मंगल निधि

12	एस.मुमताज बेगम	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
13	विद्या एम.सुवर्णा	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
14	कुसुमा बी.वी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
15	रोहिणी पी.पै	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
16	नळिनी जे.शेट्टी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
17	हेमावती	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
18	वेदावती	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
19	उषालता	सामाजिक सुरक्षा सहायक
20	वेंकटकृष्णानंदा	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
21	त्रिवेणी आर.उळ्ळाल	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
22	अनुपमा एस.पै	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
23	लता शेट	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
24	किशोरी बी.के	कनिष्ठ आशुलिपिक
25	के.मालती	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक

## उप क्षेत्रीय कार्यालय शिवमोग्गा

क्रमांक	नाम (श्रीमती/श्री)	पद नाम
1	कस्तूरी एम.बस्तिकोप्पा	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
2	पूर्णमा हेच.एन	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
3	गिरिशंकर एच	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
4	दयानंद एस. वडेयार	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
5	नित्यानंद विष्णु कुडालकर	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
6	राजू वासुदेव मोगेरा	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक

## उप क्षेत्रीय कार्यालय उडुपि

क्रमांक	नाम (श्रीमती/श्री)	पद नाम
1	कृष्णाप्पा नाइक	सामाजिक सुरक्षा सहायक
2	रेखा.ए नाइक	सामाजिक सुरक्षा सहायक
3	निर्मला.एच	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
4	अमिता.बी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
5	गणेश भट्ट	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
6	नरसिंह गोल्ला	अवर श्रेणी लिपिक

## उप क्षेत्रीय कार्यालय मैसूर

क्रमांक	नाम (श्रीमती/श्री)	पद नाम
1	के.सी वीणा	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
2	के.राजेश	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
3	विद्या शिवप्रकाश	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
4	वीणा सी.शेखर	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
5	रूपा आर	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
6	सौभाग्य टी.पी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
7	वी शांता	सामाजिक सुरक्षा सहायक
8	एन उमा	सामाजिक सुरक्षा सहायक
9	नागवेषी.पी	सामाजिक सुरक्षा सहायक
10	दयानंद आर	अनुभाग पर्यवेक्षक
11	डी आर पद्मिनी	अनुभाग पर्यवेक्षक
12	विजयलक्ष्मी आर.वी	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक

## उप क्षेत्रीय कार्यालय चिक्कमगलूर

क्रमांक	नाम (श्रीमती/श्री)	पद नाम
1	प्रभावती बी.जोशी	क्षेत्रीय भ नि आयुक्त-॥
2	नागरत्ना बी.एन	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (स ब प)
3	विवेकानंद के.एस	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
4	आनंद एस.एन	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
5	ज्योतिलक्ष्मी एम	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
6	अक्षता	वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक
7	संपत	सामाजिक सुरक्षा सहायक
8	शर्मिला एम.ए	सामाजिक सुरक्षा सहायक
9	जयश्री	सामाजिक सुरक्षा सहायक



गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग भारत सरकार के  
वार्षिक टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता 2013-14 के  
अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त कर्मचारी गण:-

क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

1 वेदावती, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक	हर एक के लिए ₹ 1600/- का प्रथम पुरस्कार
2 मुमताज़ बेगम, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक	
3 अनुपमा एस.पै, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक	हर एक के लिए
4 उषालता, सामाजिक सुरक्षा सहायक	₹ 800/- का द्वितीय पुरस्कार
5 प्रपुल्ला.के, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)	
6 बी.जयलक्ष्मी, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)	हर एक के लिए
7 चंद्रायिणी, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)	₹ 600/- का तृतीय पुरस्कार
8 आशा एस.नायक, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)	
9 विमला.के, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक (सबप)	
10 त्रिवेणी आर.उळ्ळाल, वरिष्ठ सामाजिक सुरक्षा सहायक	

मंगलूर क्षेत्र में संपन्न हिन्दीतर क्षेत्र हिन्दी निबंध प्रतियोगिता-2014

क्रमांक	नाम	पुरस्कार	पुरस्कार की राशि	कार्यालय
1.	श्रीमती सरिता के.शेणै	प्रथम	₹ 600/-	उ क्षेत्र का, मैसूर
2.	श्री डी.एम.चन्द्रशेखर	द्वितीय	₹ 400/-	क्षेत्र का, मंगलूर
3.	श्रीमती सीमा सी.नेत्रकर	तृतीय	₹ 200/-	उ क्षेत्र का, मैसूर
4.	श्रीमती कुमुदिनी एस.आर	सांत्वना	₹ 100/-	उ क्षेत्र का, मैसूर
5.	श्रीमती जयश्री	सांत्वना	₹ 100/-	उ क्षेत्र का, चिक्कमंगलूर
6.	सुश्री अक्षता	सांत्वना	₹ 100/-	उ क्षेत्र का, चिक्कमंगलूर

नराकास के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय मंगलूर द्वारा  
संपन्न हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

क्रमांक	नाम	पुरस्कार	पुरस्कार की राशि	कार्यालय
1.	श्री शक्ति कुमार	प्रथम	₹ 1000/-	केनरा बैंक
2.	श्रीमती सविता.जी शर्मा	द्वितीय	₹ 750/-	कार्पोरेशन बैंक
3.	श्री चन्द्राहास.के	तृतीय	₹ 500/-	एम आर पी एल

हिन्दी शिक्षण योजना रिपोर्ट

हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय मंगलूर में कार्यरत हर एक अधिकारी व कर्मचारी राजभाषा में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। टंकण प्रशिक्षण हेतु शेष एक कर्मचारी को

पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा शब्द संसादन प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। कार्यालय में उपलब्ध एक आशुलिपिक को हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण प्रदान करना बाकी है।

कर्मचारी समाचार  
नव नियुक्ति-स्वागत

नाम श्री/श्रीमती	पदनाम	नियुक्ति स्थल
1. कमलाक्षी.एस	बहु कार्य कर्मी	उ क्षेत्र का, उडुपि
2. हर्ष एच.डी	बहु कार्य कर्मी	उ क्षेत्र का, शिवमोगगा
3. सुभास कुमार सामन्तो	कनिष्ठ हिन्दी अनुवाधक	उ क्षेत्र का, मैसूर

पदोन्नति - बधाई

कर्मचारी का नाम श्री/श्रीमती	पद नाम	कार्यरत स्थान	पद नाम	तैनाती स्थान
एन हनुमन्ते गौडा,	प्रोग्रामर	क्षेत्र का, मंगलूर	सहायक निदेशक (सूचना सेवा)	क्षेत्र का, मंगलूर
सुकन्या उषालता	व सा सु स (सबप) अ श्रे लि	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक सा सु स	उ क्षेत्र का, शिवमोगगा
दयानंद नायक	अ प	उ क्षेत्र का, मैसूर	लेखा अधिकारी	उ क्षेत्र का, शिवमोगगा
तिरुमलेश्वर भट्ट	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, पीणया
एच.रवीन्द्र देवाडिगा	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, पीणया
अशोक कुमार (सीनियर)	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, व्हाइट फील्ड
मोहन दास बी	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, व्हाइट फील्ड
अच्युत कुमार	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, पीणया
एम.कमलाक्ष	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, व्हाइट फील्ड
वी जयराम	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मंगलूर	अनुभाग पर्यवेक्षक	क्षेत्र का, पीणया
के परशिवमूर्ति	व सा सु स (सबप)	क्षेत्र का, मैसूर	लेखा अधिकारी	उ क्षेत्र का, उडुपि

## स्थानांतरण स्वागत

कर्मचारी का नाम श्री/श्रीमती	पद नाम	से स्थानांतरित	को स्थानांतरित
प्रभावती बी.जोशी	क्षे भ नि आ	क्षे का, बेंगलूर	उ क्षे का, चिक्कमगलूर
वी.हुसेनप्पा	स भ नि आ	क्षे का,पीण्या	क्षे का, मंगलूर
एस.के.मंजुनाथ	स भ नि आ	उ क्षे का, आर.आर. नगर	उ क्षे का, उडुपि
वी.जगन मोहन राव	स भ नि आ	क्षे का,पीण्या	उ क्षे का, मैसूर
के.के.भगवान यादव	स भ नि आ	क्षे का, गुंटूर	उ क्षे का, चिक्कमगलूर
सुभास.के	प्रवर्तन अधिकारी	उ क्षे का, शिवमोग्गा	क्षे का, मंगलूर
बी.आर गिरिधर	व सा सु स (सबप)	जिला कार्यालय, हासन	उ क्षे का, चिक्कमगलूर
एच.के पुष्पा	सा सु स	उ क्षे का, चिक्कमगलूर	जिला कार्यालय, हासन

## स्थानांतरण विदाई

कर्मचारी का नाम श्री/श्रीमती	पद नाम	से स्थानांतरित	को स्थानांतरित
डी.हनुमंतप्पा	स भ नि आ	उ क्षे का, शिवमोग्गा	उ क्षे का, रायचूर
सेन्निवेल मुरुगन	स भ नि आ	उ क्षे का, मैसूर	उ क्षे का, तिरुनेलवेलि
गणेश कुमार	क्षे भ नि आ-॥	उ क्षे का, चिक्कमगलूर	उ क्षे का, पट्टणचेरु
मरियम्मा	लेखा अधिकारी	क्षे का, मंगलूर	जिला कार्यालय, हासन
डी.के यशोदा	लेखा अधिकारी	क्षे का, मंगलूर	उ क्षे का, चिक्कमगलूर
एस.मंजुनाथ	प्रवर्तन अधिकारी	उ क्षे का, चिक्कमगलूर	क्षे का, बेंगलूर
सुन्दर वी.नायक	प्रवर्तन अधिकारी	जिला कार्यालय, हासन	क्षे का, बेंगलूर
सी.परसप्पा	लेखा अधिकारी	उ क्षे का, चिक्कमगलूर	जिला कार्यालय, हासन
एच.चन्द्रकान्त गडियार	स भ नि आ	क्षे का, मंगलूर	उ क्षे का, हुबली
अलवंडीकर रघुनंदन	स भ नि आ	उ क्षे का, शिवमोग्गा	क्षे का, गुलबर्गा
उषालता	सा सु स	क्षे का, मंगलूर	उ क्षे का, उडुपि
एम.शीनप्प गौडा	स भ नि आ	उ क्षे का, मैसूर	क्षे का, चेन्नई
आर.सुरेश बाबू	लेखा अधिकारी	उ क्षे का, शिवमोग्गा	उ क्षे का, बोम्मसंद्रा
एस.जनार्धन	प्रवर्तन अधिकारी	उ क्षे का, बोम्मसंद्रा	उ क्षे का, शिवमोग्गा
के.बालसुब्रमणियन	कनिष्ठ अभियंता	क्षे का, मदुरै	क्षे का, मंगलूर

## सेवा निवृत्ति- निवृत्ति जीवन मंगलमय हो

नाम	पद नाम	तैनाती स्थल	निवृत्ति दिनांक
मोहमद शफीउल्ला	लेखा अधिकारी	उ क्षेत्र का, मैसूर	31.03.2013
अब्दुल अजीज (स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति)	व सासुस	क्षेत्र का, मंगलूर	05.07.2013
प्रभाकर.के	अनुभाग पर्यवेक्षक	क्षेत्र का, मंगलूर	31.08.2013
के.वी रत्नाकर	अनुभाग पर्यवेक्षक	उ क्षेत्र का, शिवमोग्गा	31.01.2014
शेखर (स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति)	बहु कार्य कर्मी	क्षेत्र का, मंगलूर	28.02.2014
एम.शिवानंद	अवर श्रेणी लिपिक	क्षेत्र का, मंगलूर	30.11.2013

## श्रद्धांजली

कर्मचारी का नाम (श्री/श्रीमती)	पद नाम	तैनाती स्थल	मृत्यु तिथि
जयकर.एच केशव	व सा सु स (सबप) अवर श्रेणी लिपिक	क्षेत्र का, मंगलूर उ क्षेत्र का, चिक्कमंगलूर	05.06.2013 20.09.2013

## शब्द बंध का हल

		1म	हा	शि	व	2र		
3 द	र्श	न				4 मा	ल	5 ति
म			6 म	म	7 ता			मि
8 न	व	9 दि	न		10 न	11 वा	गा	र
		मा				ग्वा		
12 अ	भि	न	13 य		14 ब	द	ला	15 व
नु			16 व	तु	ल			ह
17 ज	न	18 नि				19 स	न	म
		20 त	ख	ख	मी	ना		